शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321—9645

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 20, अंक 08, मई 2021

हिन्दी मासिक, एक रचनात्मक क्रांति

डॉ० राज बुद्धिराजा

(16 मार्च 1936 से 19 अप्रैल 2021)

संरक्षक : विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

मूल्य: 15 रुपये

चतुर्थ काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. दिए गए विषय पर आपको अपनी एच रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचना वाचन में अधिकतम पांच मिनट की हो.

नियम एवं शर्तें:

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता तथा एक सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. द्वितीय चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता तथा दो सौ रुपये की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. तृतीय चरण में पहुंचने वाले प्रतिभागियों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा। प्रथम स्थान पाने वाले प्रतिभागी को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र तथा शेष 08 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। तृतीय चरण के समस्त प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता तथा तीन सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विष्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः **यूबीआईएन 0553875**

विषय : भ्रष्टाचार

आवेदन की अंतिम तिथि 15 दिसम्बर 2021

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
एलआईजी–93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं०ः 9335155949,
sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष : 20, अंकः 03
मई : 2021

इस अंक में......

धार्मिक पुस्तकें और विज्ञान. 5

ब्रह्माण्ड की व्यवस्था अर्थहीन नहीं है. आंखों से अच्छा कैमरा दिमाग से बेहतर कोई कम्प्यूटर और शरीर से अच्छी कोई मशीन नहीं.

विज्ञापन का मकड़ जाल.... 07

मैगी/चाऊमीन का विज्ञापन बहुत आता है जिसमें बड़े अभिनेता खाते हुए दिखाई जाते है. ध्यान दे जब वह चाऊमीन अथवा मैंगी की चम्मच को मुँह तक लाते है तभी कैमरा हट जाता है. यानि वह खुद नहीं खाते पैसे लेकर आपको खाने के लिए उकसाते है जबकि रोज फास्ट फूड आदि खाने को नुकसानदेह बताया जाता है.

स्थायी स्तम्भ

अपनी बातः एक घर में मातम तो बगल में बज रही शहनाई 04

हिन्दी सूफी काव्य में धर्मनिरपेक्षता 20

सोसल मीडिया से 13

कहानीः बंद आकाश-खुला आकाश, अनपढ़, लवगुरु की जनचेतना 10, 14, 25

कविताए/गीत/ग़ज़लः डॉ0 मुक्ता कान्हा कौशिक, डॉ0 ललिता बी. जोगड़, सुमति श्रीवास्तव, अर्चना कृष्ण पाण्डेय, वंदना श्रीवास्तव 'वान्या', सतीश कुमार मिश्र 'सत्य', पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', पूनम रानी शर्मा ....16—19

साहित्य समाचार, ...09, 27, 30,31, 32

लघु कथाएंः शबनम शर्मा 28

महान फिल्मकार दिलीप कुमार 29

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.—93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011 का0: 09335155949
ई—मेल:vsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन—विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/

2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन—जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद—विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

एक घर में मातम तो बगल में बज रही शहनाई

मुंशी प्रेमचंद की कहानी मंत्र के भगत की संवेदना, मानवता आज भी अमर है. वह इसलिए कि उसने अपने गम को सहनकर चढ़डा की खुशी लौटाना अपना धर्म समझा था. बेशक कोरोना महामारी चरम है. गली, मोहल्ले से लेकर देश के कोने-कोने से त्रासदी यानि आक्सीजन, बेड, दवाओं कि किल्लत के साथ ही साथ दोस्तों, रिश्तेदारों, परिचितों के मरने की खबर भी नित प्रति सुनाई दे रही है. दूसरी तरफ शादी का मौसम चल रहा है. सोसाल मीडिया पर, ह्वाट्सएप समूहो में एक तरफ श्रद्धांजलि और दुआओं का दौर चल रहा है तो दूसरी तरफ चुटकुलों, रचना पर वाहवाही, सम्मान पर बधाई का दौर भी. एक तरफ शहनाई की धून, ढोल, नगारे बज रहे है, नृत्य हो रहे है, आतिशबाजी हो रही है, हर्ष और उल्लास का वातावरण तो वही दूसरी तरफ मातमी धून (रूदन, कराह, आह, चीख) की प्रतिध्वनि सुनाई दे रही है. एक ही मुहल्ले में मातम और उल्लास दोनों साथ-साथ हो रहे है. कुछ मुहल्लों में तो घर के आमने-सामने मातम और उल्लास साथ-साथ दिख रहा है. जहां उल्लास में बिना मास्क की भीड़ में नाते-रिश्तेदार, सगे संबंधी, दोस्त यार, पड़ोसी नजर आ रहे है तो दूसरी तरफ मातम में चार कंधे नसीब नहीं हो पा रहे है. कंधा देना तो बहुत दूर की बात हो गई मातमी दरवाजे पर मास्क पहनकर खड़ा होना भी मुनासिब नहीं समझ रहे है पराये तो पराये, अपने सगे संबंधी, पड़ोसी तक. माना कि बीमारी है लेकिन दरवाजे के सामने खड़े होकर थोड़ा-सा ढाढस बधाने से मातमी परिवार की हिम्मत बढ़ जाती है. थोड़ा आत्मबल मिलता है, इस विकट परिस्थिति से निपटने के लिए. मृत्यु अटल है, आज नहीं तो कल सबको इस दुनिया से जाना है चाहे राजा हो या रंक, निर्बल हो या सबल.

एक ही मुहल्ले में एक तरफ मिट्टी रखी है तो दूसरी तरफ बारात जाने की तैयारी. एक तरफ निमंत्रण पत्र/ बुलावा आया है तो दूसरी तरफ बिना बुलावे के जाना जरुरी है. समझ में नहीं आ रहा है कि खुशी में शामिल हो या गम में. क्या हमारी संवेदनाएं मर गई है. आप ग़म में सरीक हो या खुशी में यह आपकी मर्जी. लेकिन इतना तो किया ही जाना चाहिए कि मातमी घर के सामने तड़क-भड़क गानों पर नृत्य, ढोल नगारे की आवाज, माईक पर तीव्र आवाज में तड़क भड़क वाले गाने, आतिशबाजी में तो कंजूसी कर सकते है. इनको अगर हम पूरी तरह बंद नहीं कर सकते तो कम से कम गानों की आवाज को धीमा कर सकते है, दरवाजे पर ढोल नगाड़ों को रोका जा सकता है.

वहीं दूसरी तरफ कुछ लोग ऐसे भी है जो अपनी कारे बेचकर लोगों को आक्सीजन पहुंचा रहे है. धर्म और मजहब छोड़कर अपने दोस्त पड़ोसी को कंधा दे रहे है. कुछ उदाहरण तो ऐसे भी देखने सूनने को मिले है जहां अपने सगे-संबंधी तो मुंह मोड़ लिए लेकिन एक दोस्त अपने गैर मजहबी दोस्त को न केवल कंधा दिया, मुखाग्नि दी, दाह संस्कार किए बल्कि उसकी धर्म के हिसाब से समस्त कर्मकाण्डों को निभाया. कुछ लोग तो सगे संबंधियों की शादी छोड़कर किसी के ग़म में सरीक हुए.

जब एक विवेकहीन, बिन आवाज के घूमतू (आवारा) जानवर कुत्ता, कौआ या अन्य पक्षी मरते है तो ऊपर से उड़ने वाले जिनका कोई दूर-दूर तक रिश्ता नहीं होता पक्षी, दूसरे कुत्ते जानवर भी दो मिनट को खड़े हो जाते है फिर हम विवेकवान, संवेदनशील, सामाजिक प्राणी इतने निष्ठुर, संवेदनहीन क्यों हो गये है. आज नही ंतो कल सबको जाना है. कब किसका बुलावा आ जाए हम आप नहीं जानते. स्व० कुंवर बेचैन की इन पंक्तियों के साथ.....

मौत तो आनी है तो फिर मौत का क्यों डर रखूँ
जिन्दगी आ, तेरे कदमों पर मैं अपना सर रखूँ
कौन जाने कब बुलावा आए और जाना पड़े
सोचता हूँ हर घड़ी तैयार अब बिस्तर रखूँ।

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

धार्मिक पुस्तकें और विज्ञान

ब्रह्माण्ड की व्यवस्था अर्थहीन नहीं है. आंखों से अच्छा कैमरा दिमाग से बेहतर कोई कम्प्यूटर और शरीर से अच्छी कोई मशीन नहीं.

-ज़ेबा रशीद
सुप्रसिद्ध लेखिका, जोधपुर, राजस्थान

दुनिया में जो भी चीज है बड़ी अनोखी और बेमिसाल है. उन सबकी गवाही हमारे आज के वैज्ञानिक दे रहे हैं. जिन्होंने तरह-तरह के राकेट बना की. वैज्ञानिकों ने तो कहकशां से आगे बढ़कर सिद्ध कर दिया कि आसमानी दुनिया में कई आकाश गंगाऐं है जिनके अरबों सितारे चमक रहे हैं. जब वे सिद्ध करने जाते है तो पूरी वस्तुऐं हमारे संस्कृत वांऽमय पुस्तकों में विज्ञान से जुड़े सिद्ध होते हैं.

ब्रह्माण्ड की व्यवस्था अर्थहीन नहीं है. आंखों से अच्छा कैमरा दिमाग से बेहतर कोई कम्प्यूटर और शरीर से अच्छी कोई मशीन नहीं.

ईश्वर का बनाया, पुर्जो की तरह पकड़ने वाला एक पंजा भी दुनिया के सारे वैज्ञानिक मिलकर नहीं बना सकते है लेकिन जब वे सिद्ध करने जाते है तो पूरी वस्तुऐं हमारे संस्कृत वांऽमय पुस्तकों में विज्ञान से जुड़े सिद्ध होते है.

ब्रह्माण्ड की व्यवस्था अर्थहीन नहीं है. उसने जमीन को फर्श और आकाश को ऐसी छत बनाई जिसमें कोई दरार या खम्बा नहीं है.

आकाश और धरती की संरचना, रात दिन की अदला बदली, समुद्र और नदी में जहाज व नौकाएं भागती चलती है. जो कुद भी है आकाश और धरती के बीच यह कोई खेल नहीं हैं.

चांद-सूरज को समय के हिसाब का साधन ठहराया, अंधेरे-उजाले का विधान बनाया. सूर्य की रोशनी में रोजी कमाने के लिए दिन और रात को अंधेरा आराम करने के लिए. न रात दिन से पहले आ सकती है. और ना सूरज निकलने से पहले दिन हो सकता है.

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि अल्लाह के रसूल ने यह पैगाम पवित्र कुरान जिस समय दुनिया वालों के सामने फरमान किया उस समय खबर देने के लिए तार, टेलीफोन, टी. वी. मोबाइल कुछ नहीं थे फिर भी आपकी बताई हुई बातें आज की की इस वैज्ञानिक युग से सच्ची साबित होती है.

वेदों में पर्यावरण को अनेक वर्गो में बांटा जा सकता है. वायु, जल, ध्वनि, खाद्य, मिट्टी और वनस्पति, वन सम्पदा, पशु-पक्षी आदि.

वायु की स्वच्छता का हमारे जीवन में प्रथम स्थान है. बिना प्राण वायु के क्षण भर भी जीवीत रहना सम्भव नहीं है. ईश्वर ने प्राणी जगत के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी के चारों ओर वायु का सागर फैला रखा है. वायु की शुद्धि जीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है. हवा कई प्रकार के मिश्रण से बनी हुई है. इसमें आक्सीजन का मौजूदा होना बहुत महत्वकारी है.

शुद्ध ताजी हवा अतूल्य औषधि है जो हमारे हृदय के लिए दवा के समान उपयोगी है, आनन्दायक है. हवा हमें जीवन देती है वही हवाओं के झोंकों से पेड़-पौधे लहराते हैं. पत्थरों के अन्दर भी अपनी एक ताकत होती है. आग, पानी, हवा से हमारा जीवन है.

भूगोल की दृष्टि से देखते है तो धरती का फटना, पहाड़ों का अटल खड़ा रहना, नदियों का बहना, समुद्र में हलचल, हवा बादलों को उठाती है. उन्हें परतों और टुकड़ियों के रुप में फैला देती है.

ओस की बूंदे, बरसात यानी फुहारों से पेड़ पौधे हरे भरे रहते है. उन्हें पानी से भोजन मिलता है. आसमान से निकला पानी बड़ी-बड़ी बूंदो के रूप में बरसता है, हमें मीठा पानी मिलता है. हमारी प्यास बूझती है. पानी में वे सब तत्व मौजूद होते है जिनकी हमारे शरीर को जरूरत होती है. वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो पानी में इतने गुण होते है कि मुर्दा पेड़ों को जिंदा कर देता है. बरसात के पानी में गुठली को फाड़कर पौधा निकल जाता है. उसमें हरी-हरी पत्तियां,

कोपलें निकलती है और कोपलों में से दाने निकलते हैं. जब फल टपकते है तो पौष्टिक गुणों से भरपूर होते हैं.

अर्थात 'याद रखिए' जल मंगलमय और घी के समान पुष्टि दाता है तथा वही मधुरता भरी जल धाराओं का स्त्रोत भी है.

देखने सुनने एवं बोलने की शक्ति बिना पर्याप्त जल के उपयोग के नहीं आती. जल ही जीवन का आधार है. इसलिए जल को पवित्र रखना और ध्यान से रखना जरूरी है.

जब मानव जीवन में पेय के रूप में, सफाई एवं वस्तुओं को ठंडा व गर्मी से राहत पाने में, विद्युत उत्पादन में, अग्नि बुझाने में, कृषि में, उद्योगों में अति आवश्यक है. जल बिना जीवन सम्भव नहीं.

मादा चौपाइयों से हमें दूध मिलता है. दूध में स्वास्थ्य की दृष्टि से वे सब गुण मौजूद होते है, उनकी हमारे शरीर को जरूरत होती है.

संस्कृत वाड्मय से हिदायतें मिलती है कि धैर्यवान एवं दयावान बने रहो. अच्छा चरित्र रखो. अपने देश के प्रति वफादार रहो. कोई फंसाद न करो जिससे अमन शांति बनी रहे. कोई धर्म नहीं सिखाता कि किसी को कष्ट दो. इन पवित्र पुस्तकों में कई निशानियां है. हमें अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए. पवित्र पुस्तकें हमारा मार्ग दर्शन द्वारा बहुत कुछ सिखाती है.

इन्सान, जानवर सबकी अपनी-अपनी पसन्द और अलग-अलग खुराक होती है. सब अपनी-अपनी बोलियां और अन्दाज व आवाजों से काम लेते हैं. हरे-भरे लहराते पौधे भी हवा के झोंकों के साथ तराने गाते है. पत्थर के अन्दर भी एक तपकत है अपनी बुलन्दी का लोहा मनवाकर अपनी खामोशी से रहता है.

आसमान से पानी उतरा जमीन पर ठहरा दिया. पहाड़ो से कई प्रकार की सामग्री प्राप्त होती है. जड़ी-बूटियां मिलती है.

चौपाईयों को बोझ ढोने के अलावा, ऊन, रेशम और बालों के सामान प्राप्त करने का साधन बनाया.

ईश्वर ने धरती के सभी खजाने आदमी के अखितियार में दिए है. समुद्र को मनुष्य के अख्तियार में किया ताकि उसमें से ताजा गोस्त, विभिन्न वस्तुओं से जेवरात बनाने और उपयोगी वस्तुऐं प्राप्त हो सकें.

कोई धर्म नहीं सिखाता कि किसी को कष्ट दो. धार्मिक पुस्तकों में कई निशानियां है. हमें अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए. पवित्र पुस्तकें हमारा मार्ग दर्शन करती है तथा बहुत कुछ सिखाती है.

आदमियों की भरी कश्ती नदी में नहीं डूबती, सागर में जहाज भागते हुए चलते हैं. समुद्र से भी कई रोजगार उपलब्ध होते हैं. इसमें भी वैज्ञानिक राज है. आसमान में परिन्दें उड़ते हैं, हवा उनको थामें रहती है.

प्रत्येक मादा, मादा चौपाइयों के पेट से दूध मिलता है और दूध में स्वास्थ्य की दृष्टि से वे सभी गुण मौजूद होते है जिसकी हमारे शरीर को जरूरत होती है.

कुछ पत्थर ऐसे भी है जो रगड़ने पर आग पैदा करते हैं. कुछ पौधे भी ऐसे है जो देखने में हरे होते हैं लेकिन इनकी शाखाओं को रगड़ा जाता है तो आग निकलती है.

संस्कृत वांड्मय से हमें बहुत ज्ञान मिलता है. पाकीजा चीजों को खाओं जिससे शरीर स्वस्थ रहे. अच्छे कार्य करो जिससे आत्म शुद्ध रहे. किसी जीव की हत्या न करो.

कुछ पत्थर ऐसे भी है जो रगड़ने पर आग पैदा करते हैं. कुछ पौधे भी ऐसे है जो देखने में हरे होते है लेकिन इनकी शाखाओं को रगड़ा जाता है तो आग निकलती है.

संस्कृत वांड्मय से हमें बहुत ज्ञान मिलता है. पाकीजा चीजों को खाओं जिससे शरीर स्वस्थ रहे. अच्छे कार्य करो जिससे आत्मा शुद्ध रहे. किसी जीव की हत्या न करो.

हमारी धार्मिक पुस्तकें कहती है देश में अमन शांति कायम रखो. आपस में भरोसा रखो. मिट्टी और पानी से पैदा किया जीव का शरीर वैज्ञानिक मिसाल है. धरती निर्जीव मानी जाने के बावजूद भी जीवीत मानी जाती है.

पवित्र कुरान, गीता का स्वभाव इतना सार्वभौमिक है तथा सर्वकालिक है कि उससे पथ प्रदर्शन प्राप्त करने में किसी प्रकार का संदेह नहीं. पवित्र पुस्तकें मार्ग दर्शन के साथ कई वैज्ञानिक बातों का ज्ञान कराती है.

इतना सब कहने का तात्पर्य इतना है कि भारतीय विज्ञान अपने चरम पर रहा है. उसको समझने की आवश्यकता है.

अच्छे काम करते रहिये चाहे लोग तारीफ करें या न करें आधी से ज्यादा दुनिया सोती रहती है 'सूरज' फिर भी उगता है.

विज्ञापन का मकड़ जाल

-हितेश कुमार शर्मा,
बिजनौर, उ.प्र.

टीवी खोलिए. खोलते के साथ आपको श्री रोशन लाल अभिनेता के दर्शन होगे जो किसी शीतल पेय का विज्ञापन कर रहे है. दिखाई देता है कि वह शीतल पेय पीकर मोटरसाईकिल पर बैठकर उसे दौड़ाते हुए एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर जा पहुँचते है बीच में बहुत बड़ी खाई है और उनकी मोटरसाईकिल भी पहुँचने वाले पहाड़ के बिलकुल किनारे पर जाकर ठहरती है. शीतल पेय के द्वारा वह यह साबित करने की कौशिश करते है कि शीतल पेय में बड़ी जान है यह बड़ा हौसला देता है. मेरा दर्शकों से अनुरोध है कि न तो शीतल पेय पर भरोसा करें और ना ही इस विज्ञापन को दौहराए. रोशनलाल जी करोड़ों रुपये लेकर यह विज्ञापन करते है उनको इससे कोई मतलब नहीं कि शीतल पीना स्वास्थ वर्द्धक है अथवा नहीं वह कुछ मुँह से बोलते भी नहीं है बस अपने एक करोड़ से मतलब है. और यह जो एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर कूदते दिखाऐं जाते है इसमें भी केवल इनका चेहरा शुरू में और आखिर में दिखाया जाता है. सारा स्टन्ट इनका डुप्लीकेट करता है अतः इनके विज्ञापन पर विश्वास करना स्वयं को धोखा देना है. इसी प्रकार एक और विज्ञापन दिखाई देता है जिसमें एक बड़े खान पेप्सी पीते हुए दिखते है और यह महसूस कराना चाहते है कि इसे पीकर आप बड़े से बड़ा काम मिनटों में कर सकते है. कभी आपने उन्हें पेप्सी पीते हुए नहीं देखा होगा. यह कैमरे का कमाल है कि जब बोतल उनके मुँह के पास आती है और वह बोतल मुँह से लगाकर उससे घूट भरते दिखाई देते है. तभी कैमरा हट जाता है और जब बाद में वहाँ आता है तो बोतल में जरा सी भी शीतल पेय कम नहीं होती अर्थात वह पैसे लेकर आपको पेप्सी पीने के लिए उकसाते है. खुद नही पीते. पिछले दिनों मैगी/चाऊमीन का विज्ञापन बहुत आया जिसमें सबसे बड़े अभिनेता खाते हुए दिखाई जाते है गौर से देखिए वही स्थिति है कि जब वह चाऊमीन अथवा मैंगी की चम्मच को मुँह तक लाते है तभी कैमरा हट जाता है. यानि वह खुद नहीं खाते पैसे लेकर आपको खाने के लिए उकसाते है जबकि रोज फास्ट फूड आदि खाने को नुकसानदेह बताया जाता है. लेकिन वर्तमान अभिनेताओं को इससे कोई मतलब नहीं कि उस वस्तु में गुण है अथवा नहीं उन्हें केवल पैसे से मतलब है आज कल एक विज्ञापन आ रहा है पान मसाले का जिसमें एक देवतातुल्य अभिनेता उसे खाते हुए दिखाये जाते है. और बड़ी विनम्रता से नमस्ते करते हुए दिखाये जाते है सब आँखों का फरेब है. वह खाते नहीं खाने को उकसाते है. ऐसे और बहुत सी वस्तुओं के विज्ञापन है. साबुन के चाय के टूथपेस्ट के और भिन्न भिन्न वस्तुओं के जो यह अभिनेता करते है. क्या आपने कभी दिलीप कुमार राजकपूर राजकुमार अथवा पृथ्वीराज या अशोक कुमार को इतने विज्ञापनों में देखा है. मुझे तो याद नहीं आपने देखा हो तो बताऐं. मेरा कहने का तात्पर्य है कि यह विज्ञापन आँखों को फरेब देकर दिखाऐं जाते है. और करोड़ों रुपये अभिनेताओं को दिये जाते है. इससे वस्तु का तो मूल्य बढ़ता है और जनता भ्रमित होती है. मेरा मानना है कि जिन वस्तुओं का विज्ञापन करोड़ों रुपये खर्च करके दिखाया जाता है उसे लेना बन्द कर दे और कसम खा ले कि जिस वस्तुओं का विज्ञापन हमारे महान अभिनेता करेंगे उनका प्रयोग हम कभी नहीं करेंगे. इससे वस्तुओं के दाम कम होगे और गलत तरीके का प्रचार रूकेगा. सही वस्तु की और सही वस्तु को प्रचार की आवश्यकता नहीं होती. ग्राहक खुद उसका प्रचार करता है. इस विज्ञापन के मकड़ जाल में फंसकर कभी कभी ग्राहक बहुत नुक्सान उठाता है.
कभी आपने किसी अभिनेता या किसी क्रिकेटर को बाबा रामदेव के उत्पाद के विज्ञापन करते हुए देखा है. मेरी

> मैगी/चाऊमीन का विज्ञापन बहुत आता है जिसमें बड़े अभिनेता खाते हुए दिखाई जाते है. ध्यान दे जब वह चाऊमीन अथवा मैंगी की चम्मच को मुँह तक लाते है तभी कैमरा हट जाता है. यानि वह खुद नहीं खाते पैसे लेकर आपको खाने के लिए उकसाते है जबकि रोज फास्ट फूड आदि खाने को नुकसानदेह बताया जाता है.

जानकारी में नहीं है. लेकिन जितने क्रिकेटर है और जितने अभिनेता है सब या तो साबुन या शीतल पेय अथवा कपड़ा धेने के पाउडर के विज्ञापन करते है. जबकि इनके घरों में इसका प्रयोग नहीं होता. साबुन का विज्ञापन करने वाली अभिनेत्री उस साबुन से कभी नहीं नहाती जिसका विज्ञापन करती है सारे अभिनेता और क्रिकेटर केवल पैसा लेकर उन वस्तुओं का विज्ञापन करते है जिनको वह कभी इस्तेमाल सम्भवतः नहीं करते. वर्तमान में अखबार अखबार नहीं रहे बल्कि विज्ञापन का बंडल हो गये है. अखबार का मुख पृष्ठ करोड़ों रुपये लेकर विज्ञापन बन गया है. क्या अखबार बांट रहे है क्या अखबारों में छप रहा है. गौर से देखिए क्या आपके परिवार को मार्गदर्शन देने वाली कोई बात अखबार में छपी है. नहीं अधिकतर गुप्त रोगी मिले पेट सफा तो रोग दफा जोड़ों का दर्द काफूर ऐसे विज्ञापन छपते है. आप भूल से भी गुप्त रोग में उत्तेजना वाली कोई दवा न खाऐं अन्यथा कैन्सर होने का ख़तरा हो जायेगा. जोड़ों के दर्द के विज्ञापन खूब निकलते है पैरों पर बाँधने वाली पट्टियाँ, तेल और कैपसूल के विज्ञापन आपको खूब मिलेगे. लेकिन किसी नेता अभिनेता या क्रिकेटर का फोटो देखकर विज्ञापन पर विश्वास मत कर लेना. एक फिल्मी डायलाग है पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें. इसी के आधार पर वस्तुओं की खरीद होनी चाहिए. करोड़ों रुपये लेकर जिन वस्तुओं का विज्ञापन किया जा रहा है उन पर आँख मून्दकर विश्वास नहीं करना चाहिए. जिस वस्तु की सत्यता आपने प्रयोग करके सुनिश्चित नहीं की है उस पर केवल विज्ञापनकर्ता का फोटो सही का प्रमाण नहीं है. क्योकि जिसने विज्ञापन किया है और जिसने विज्ञापन दिया है उनके बीच करोड़ों का लेन देन हुआ है. और इस करोड़ों के कारण ही दस रुपये की वस्तु के दाम पचास रुपये हो जाते है अतः बहुत सोच समझकर केवल फोटो पर विश्वास करके कोई चीज न खरीदे किसी वस्तु का प्रयोग न करें. इसी में आपकी भलाई है इसी में आपकी सुरक्षा है और इसी में आपकी बचत है. अपने स्वार्थ में किये जाने वाले और दिये जाने वाले विज्ञापन मनलुभावन तो होते है किन्तु मनभावन हो सकते है अथवा नहीं. निरापद भी है अथवा नहीं. दाम उचित लिये जा रहे है अथवा जेब कट रही है यह बाते आपको सोचनी है. विज्ञापन करने वाले को इससे कोई मतलब नहीं कि वह वस्तु उपयोगी है अथवा नहीं ग्राहक इसे खरीदेगे अथवा नहीं. उसे अपने पारिश्रमिक से मतलब है जो करोड़ों में होता है. अगर आप इन महान अभिनेताओं और क्रिकेटरों द्वारा विज्ञापित वस्तुओं को आँख मून्दकर खरीद लेते है तो आप उन वस्तुओं की मूल्य वृद्धि के भी जिम्मेदार है. क्योंकि जिस कम्पनी ने अपने उत्पाद का विज्ञापन करने के लिए करोड़ों का भुगतान किया है वह उस भुगतान को उस वस्तु की कीमत से ही वसूल करेंगा. अतः वस्तु की कीमत बढ़ जायेगी. अगर आप उन वस्तुओं को खरीदना बन्द कर देगे जिनका विज्ञापन करोड़ों लेकर अभिनेता या क्रिकेटर करते है तो कालान्तर में उन वस्तुओं की कीमत कम हो जायेगी अतः बन्द कर दीजिए उन वस्तुओं को खरीदना जिन का विज्ञापन करोड़ों खर्च करके कराया गया है.

किसी वस्तु के विज्ञापन का सस्ता और सुलभ तरीका यह है कि उस वस्तु का नाम फोटो तथा गुण टीवी पर अथवा अखबार में छपवा दिये जाये. और नीचे लिख दिया जाये 'पहले इस्तेमाल कीजिए फिर विश्वास कीजिये मित्रों परिजनों पुरजनों किसी भी वस्तु की गुणवत्ता उस वस्तु के विज्ञापनकर्ता के फोटो से नहीं बढ़ती बल्कि कीमत बढ़ जाती है. कीमत घटाना आपके हाथ में है वह वस्तु मत खरीदिये जिसके विज्ञापन में वस्तु के उत्पादनकर्ता ने करोड़ों रुपये खर्च किये है बल्कि वह वस्तु खरीदिये जिसका सरल और सुलभ विज्ञापन अखबार में टीवी पर अथवा पत्रिका में छपा है, सुखी रहेंगे.

जोड़ों के दर्द के विज्ञापन खूब निकलते है पैरों पर बाँधने वाली पट्टियाँ, तेल और कैपसूल के विज्ञापन आपको खूब मिलेगे. लेकिन किसी नेता अभिनेता या क्रिकेटर का फोटो देखकर विज्ञापन पर विश्वास मत कर लेना.

हुनर तो सबमें होता है फर्क बस इतना होता है कि किसी का छिप जाता है तो किसी का छप जाता है.

ओमान से एक हिंदी शिक्षक की गुहार

हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को बचाने में सहायता कीजिए

सीबीएसई से सम्बद्ध इंडियन स्कूल निजवा ओमान से हिन्दी भाषी हिन्दी शिक्षक-शिक्षिकाओं को षड्यंत्र करके हंटाकर हिन्दी भाषा को कमजोर किया जा रहा है. ये बातें लिखने पर स्कूल वाले जेल में बंद करवा देने की धमकियाँ दे रहे हैं. हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को बंचाने में सहायता कीजिए.

1 अप्रैल को अम्बेसडर साहब ने मुझे मिलने का समय दिया था. निजवा से मिलने के लिए हम दोनों गये थे पर अचानक सर की कोई मीटिंग आ गई तो पूरी बात नहीं हो पाई. उन्हें बताना चाहता हूँ :- निजवा की समस्या के लिए जिम्मेदार प्रिंसिपल जॉन डोमनिक प्रिंसिपल के लायक योग्यता-अनुभव नहीं रखते हैं. प्रेसिडेंट नौशाद काकेरी कम पढ़े-लिखे छोटे बिजनेस मैन हैं, जिनके बच्चे लगभग 2 साल पहल आई.एस.एन. से टीसी ले चुके हैं. ऐसे अरुण प्रसाद और मुफीद साहब भी प्रिंसिपल की संकुचित धारणा के समर्थन के लिए कमेटी में हैं- इन्हीं सबसे तंग आकर अत्यंत अनुभवी और योग्य पुराने प्रेसीडेंट डाक्टर जुनैद - अनुपमा मैम और फरकत उल्लाह सर कमेटी से रिजाइन कर दिया है. (उन्होंने कई बार प्रिंसिपल की समस्याओं को बीओडी में भेजा था, पर कोई सुनवाई नहीं हुई.) डॉक्टर जुनैद की कमेटी के सभी लोग, जब वो लोग कमेटी चला रहे थे, टीचर्स के निवेदन पर एचओडी एण्ड इंचार्ज को बदलने की बात की थी, पर प्रिंसिपल ने किसी की बात नहीं मानी और पब्लिकली सभी स्टाफ के सामने मना कर दिया. आज उन्हीं अयोग्यों की टीम बनाकर प्रिंसिपल सर राजनीति कर रहे हैं- प्रिंसिपल के आने से पहले आईएसएन में रियाल्स की कमी नहीं रहती थी- बोर्ड में बच्चे फेल नहीं होते थे सब मिलकर काम करते थे. मेरे मेंटर फहीम सर हैं पर आज प्रिंसिपल मेरे बारे में एगेंस्ट द कम्यूनिटी का झूठा प्रचार करते हैं क्योंकि सबसे जूनियर अपेक्षाकृत अनुभवहीन रूना फातिमा को हिन्दी एचओडी कैसे बनाए हैं- मैंने ये प्रश्न कर दिया था-ये निवेदन दिसंबर 2019 में ऐम्बेसडर साहब से मिलने पर और पुराने प्रिंसिपल- प्रेसीडेंट को भी भेजा था तब तो ये प्रश्न इस श्रेणी में नहीं आया था? जिससे सभी दुखी हुए पर प्रिंसिपल के साथ पूरा बीओडी ऑफिस है ये सोचकर सभी चुप रह गए. बोर्ड रिजल्ट्स जो कि इस बार का सबसे खराब आया है, स्कूल में लगाया जाए ऐसे निर्देश को जो कि उस समय के अकेडेमिक कोआर्डिनेटर अनुपमा मैम ने सुझाव दिया था, उनकी बात भी प्रिंसिपल ने नहीं मानी थी. इसलिए अनुपमा मैम ने दुखी होकर रिजाइन कर दिया.

2015 में मेरे ज्वाइन करने के बाद 7 हिन्दी शिक्षक-शिक्षिकाएँ थीं. डॉ० अशोक कुमार तिवारी, हिन्दी विभागाध्यक्ष, सुनंदा तिवारी, शोभा मैम, हिना आलम, प्रियदर्शिनी मैम, प्रमोद तिवारी, रूना फातिमा (रूना फातिमा के अतिरिक्त सभी गैर मलयाली थे. आज केवल रूना फातिमा एकमात्र हिन्दी शिक्षिका आईएसएन में बची हुई हैं. बाकी सभी को षड्यंत्र करके हटा दिया गया है) स्कूल के 53 टीचर्स तथा हिन्दी पढ़ने वाले बच्चों के पैरेंट्स के लिखित निवेदन पर भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है. 25 फरवरी की इन्क्वायरी रिपोर्ट भी अभी तक नहीं आई है।

-डा. अशोक कुमार तिवारी

डॉ. राम सहाय बरैया सम्मानित

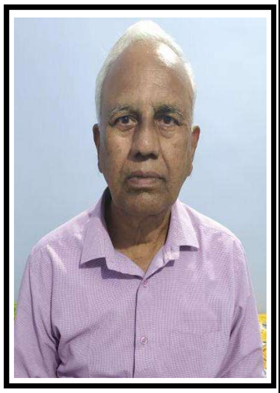

वरिष्ठ साहित्यकार एवं विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के आजीवन सदस्य डॉ. राम सहाय बरैया ग्वालियर को हिंदी भाषा, साहित्य, इतिहास, धर्म संस्कृति, पत्रकारिता, समाज सेवा के योगदान के लिये, इतिहास एवं शोध संस्थान द्वारा 'राष्ट्रीय भाषा स्वाभिमान विद् श्री' सम्मानोपाधि से अलंकृत किया. यह सम्मान उन्हें कोविड-19 के नियमों का पालन करते हुये उनको घर पर डाक से भेजकर किया गया है. इस उपलब्धि के लिये उनके मित्रगणों ने उन्हें बधाई /शुभकामनाएं दी हैं.

बंद आकाश-खुला आकाश

मैं यों ही एक दिन तोते का बच्चा बिंजरें के साथ खरीद कर घर ले आया. उसके खाने-पीने के लिए दो कटोरियाँ पिंजरे में रख दीं. नया-नया कैदी था, सो अक्सर चुप ही रहता. कभी-कभी 'टाँय-टाँय' की आवाज में चीखने लगता. घर के लोग निर्दोश कैदी को बीच-बीच में छेड़ कर आनंद लेते. किसी की बेबसी, किसी का विनोद. खाने के वक्त उसे भी खाना और पानी बड़े प्यार से देते लेकिन वह एक-दो और कुटा-कुटा कर छोड़ देता और यह तो टाँच-टाँय शुरू कर देता या फिर बेबसी में चुपचाप सींखचों से बाहर देखता रहता. उसे 'राम-राम' कहने का रोज अभ्यास कराया जाने लगा. पहले तो वह 'हैं! हैं!' 'आमाम' 'आमाम' कहने लगा. अब वह रोज के समय पर खाना या पानी न मिलने पर कटोरी मुँह से उठा-गिरा कर संकेत भी करने लगा. फिर भी, कभी-कभी वह बड़ा उदास बैठा रहता और छेड़ने पर भी एक-आध प्रतिरोध ऐसे करता जैसे चिन्तन में बाधा पड़ने पर कोई मनीषी, सात्विक क्रोध प्रकट कर पुनः चिंतन में लीन हो जाता है.

एक दिन तोतों का बड़ा झुण्ड हमारे-आँगन के पेड़ो पर आ बैठा. उनकी टाँय-टाँय से सारा आँगन गूँज उठा. मैंने देखा कि उनकी आवाज सुनते ही पिंजरे में मानो भूचाल आ गया. तोते ने ऐसा उग्र रूप धारण किया कि वह नन्हा-सा जीव विकर कर मुझे किसी गरूड़ से कम न लगा. पंखों की निरंतर फड़फड़ाहट, टाँय-टाँच की चीखों तथा चोंच के कुध्द आघातों से वह सींखचों को जैसे उखाड़ फेंकना चाहता था. उसके पंखों के टुकड़े हवा में बिखर रहे थे, चोंच लहू-लुहान हो गई थी लेकिन इन सबसे बेपरवाह वह उस कैद से किसी तरह मुक्त होना चाहता था. झुण्ड के तोते भी उसे आवाज देकर प्रोत्साहित करते-से लग रहे थे. झुण्ड के उड़ जाने के बाद उसका ज्वार कुछ शान्त जरूर हो गया था लेकिन क्षत-विक्षत उस कैदी की आँखों में आक्रोश की लालधारियां बहुत देर तक दिखाई देती रहीं. बीच-बीच में फिर वह अपनी चोंच को सींखचों पर पूरे जोर से दे मारता. उसकी इस बेचारगी ने घर के लोगों को भी कुछ देर के लिए विचलित कर दिया और वे उसे मुक्त करने की बात भी करने लगे, लेकिन बाद में बात आई-गई हो गई.

एक दिन तोतों का बड़ा झुण्ड हमारे-आँगन के पेड़ो पर आ बैठा. उनकी टाँय-टाँय से सारा आँगन गूँज उठा. मैंने देखा कि उनकी आवाज सुनते ही पिंजरे में मानो भूचाल आ गया. तोते ने ऐसा उग्र रूप धारण किया कि वह नन्हा-सा जीव विकर कर मुझे किसी गरूड़ से कम न लगा.

कुछ दिनों बाद की बात है. एक दिन उसका पिंजरा हमने इस अनुमान से खोल दिया कि शायद वह उड़ना भूल गया होगा. द्वार खुला, वह धीरे-धीरे बाहर आया. एक-क्षप रूककर उसने कुरकी ली और आँगन की मेंड़ पर जा बैठा. उसके पंखों और पैरों में लड़खड़ाहट थी. फिर भी, वह अपनी स्वाभाविक टाँय-टाँय करता हुआ एक डाल से दूसरी डाल पर फुदकता जा रहा था. उसके बाद, सीढ़ीदार खेतों पर बैठता -उड़ता वह घर से दूर होने लगा. अपनी भूल पर पछताता मैं, और मेरी मुखमुद्रा से सहमे हुए गाँव भर के बच्चे, तोते के पीछे-पीछे उसे पुचकार कर बुलाते जा रहे थे और वह हमसे दूर होता जा रहा था. मैंने गौर किया कि उसकी उड़ान में, और तोतों-जैसी फुर्ती न थी. उसकी इस कमी को लक्ष्म करके मुझे शंका होने लगी कि यदि वह लौटा नही तो, न तो अपने साथियों के साथ उन्मुक्त उड़ पायेगा और नहीं अपना दाना जुटा पाएगा. उसे भी जैसी अपनी लड़खड़ाहट का बोध हो चुका था. शायद इसीलिए, कुछ दूर जाने पर वह एक पेड़ की डाल में बैठा ही रह गया और उसे पुचकारते हुए 'आओ पट्ट्ट, आओ' कहते-कहते जब मैं उसके पास पंहुचा तो उसने भी डरते-झिझकते "हैं! हें." करते हुए अपने आप को मेरे हवाले कर दिया. काश! उसने अपनी लड़खड़ाहट को अपनी कमजोरी न मान लिया होता. अगर उसने थोड़ी हिम्मत बटोरी होती तो उसके पंखों की जकड़न धीरे-धीरे खुल गई होती और जल्दी ही वह नीलगगन का उन्मुक्त पंछी होता. मगर वह अपनी लड़खड़ाहट से घबरा कर हिम्मत हार बैठा और फिर से पिंजरे का पंछी होकर रह गया.

करीब साल भर के बाद, एक दिन फिर उसके उड़ने की जाँच हुई. अबकी बार खुले में पिंजरा खोलने का जोखिम नहीं लिया गया. घर की बैठक में दो

बड़ी जालीदार खिड़कियों को छोड़कर बाकी रास्ते बंद कर दिये गये. पिंजरा खोला गया. कुछ दूर खड़े होकर हम सब उसे ही देखने लगे. ''हें! हें!'' बोलता हुआ पहले वह खुले द्वार की ओर बढ़ा. फिर रूककर गौर से उसे देखने लगा. उसने एक फुरकी ली, लेकिन द्वार की ओर नहीं बढ़ा. फिर एक फुरकी. हमें लगा कि हमारे डर से वह बाहर नहीं आ रहा है. हम ओट में होकर उसे देखने लगे. वह ''हें! हें!'' करता रहा लेकिन द्वार की ओर फिर भी नहीं बढ़ा. कुछ देर बाद वह द्वार की ओर बढ़ा जरूर, लेकिन एक निग़ाह बाहर डालकर फिर पिंजरे में मुड़ गया. फिर द्वार पर आया और शंकित-सा बाहर निकला. उसे शायद अपनी मुक्ति पर विश्वास नहीं हो पा रहा था या फिर वह उड़ने में खुद को असमर्थ महसूस कर रहा था. हम उत्सुकता से देख रहे थे. उसने एक लम्बी फुरकी ली, जैसे उड़ने से पहले पंखों को तोल रहा हो. वह पहली मुक्ति के समय की अपनी बेबसी को शायद भूल गया था.

उसने दो तीन जगह अपने पंखों को चोंच से खुजलाया और सोचने लगा- ''आज वह मुक्त है. आज फिर ऊँची उड़ान भरकर पहुंच जाएगा झुण्ड में, अपने साथियों के पास. हर्षोल्लास-युक्त कोलाहल से आकाश को गूँजाते हुए, फलों से लदी डालियों और पकी फसल की झूमती बालियों से भरे हुए खेतों की सैर करेगा, मीठे-मीठे फलों का रसास्वादन करेगा और झरनों का ठंठा पानी पीकर अपनी लम्बी दुम को लहरा देकर 'ट्वींट-टवींट' की सीटी से बॉज और चीड़ के जंगलों को गुँजाता हुआ नन्हें-से कोटर की ओर मुड़ लेगा. जब शाम का धुँधुलका घिरने लगेगा तो अपने घोंसले में लौट जाएगा, जहाँ कोई उसकी प्रतीक्षा करता होगा' उसने झटके से पंखों को फैलाया कि एक ही उड़ान में वहाँ से फुर्र हो जाए. लेकिन यह क्या? पंख केवल फड़फड़ाकर रह गए! वह चकित था. उसने एक उड़ान भर कर पास के पीछे तक पहुँचना चाहा, लेकिन किनारे तक पहुँचने से पहले ही जमीन पर गिर पड़ा और फड़फड़ाने लगा. उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे हो क्या गया हैं? 'हे! हें!' करता वह बारबार उड़ने की कोशिश करता और हर बार मुँह की खाता.

अंत में, विफल प्रयास, थका-हारा, पिंजरे की परिक्रमा करने के बाद वह द्वार पर आ रूका. उसने एक निराश दृष्टि अपने चारों ओर डाली और सिर झुका कर धीरे-धीरे पिंजरे के अंदर चला गया. मुड़कर एक बार फिर ललचाई नजर से उसने पिंजरे के खुले द्वार को निहारा और हताशा से मुँह फेर लिया. पिंजरे में अपनी चोंच को पंखों के बीच छुपाकर आँखें मूंदे खामोश बैठ गया. अब पिंजरा ही उसकी नियति था. वह चाहने पर भी इसे छोड़कर कहीं नहीं जा सकता था.

वह पछता रहा था...''मैंने उस दिन उड़ जाने का मौका क्यों खो दिया? काश! उस दिन थोड़ी हिम्मत करके मैं उड़ गया होता तो फिर चाहे मेरा जो होता, हो जाता. मर भी जाता तो मौत भी इस कैद से, इस गुलामी से, लाख गुना बेहतर होती. पर अब क्या करूँ? इतने अरसे के बाद मैं शायद उड़ना ही भूल गया हूँ और पंखों ने भी जवाब दे दिया है. उसने मान लिया कि मुक्त उड़ान का, खुले आकाश का, बागों और खेतों की सैर का, प्रकृति की ममतामयी गोद का और नन्हें-से अपने घोंसले का, उसका सपना भी उसी की तरह इस पिंजरे में कैद होकर रह जाएगा और एक दिन शायद उसी के साथ दफन भी हो जाएगा.''

मुझे लगा जैसे विवशता के आँसू आज उसकी आँखें ही नहीं बल्कि उसका रोम-रोम हो रहा हैं और पूरी मानव -जाति को कोस रहा है कि-'यह आदमी नामका प्राणी कितना स्वार्थी हैं! खुद तो आजाद रहना चाहता है और हम आजाद पंछियों को कैद करके रखता है. ऊपर से हुक्म चलाता है, यह जताने के लिए कि कोई ऐसा भी है जो मेरे इशारों पर नाचता है. मुझे कैद कर दिया पिंजरे में. ऊपर से हुक्म देता है-ये बोलो! वे बोलो! बेल दिया तो 'शाबाश' कहेगा, मिर्च खिलाएगा. न बोलो तो डाँट पिलाएगा. सींकों से कोचेगा.

मुझे नहीं सीखनी इन्सान की भाषा. इसने खुद तो बोल-बोल कर इन्सानियत का सत्यानाश कर रखा है. कितनी अच्छी जीभ दी है भगवान् ने इन्सान को! पर, इसने उसका क्या किया? बोलना चाहिए कि नहीं, क्या बोलना चाहिए, क्या नहीं! बेलना है तो कब बोलना है, कैसे बोलना है, कहों बोलना हैं! इतना भी इन्सान अभी तक नहीं समझा। इसे समझ लेता तो बहुत-से दंगे-फसाद, झगड़े और उपद्रव खत्म हो जाते.

चला है मुझे सिखाने! मेरी चुप्पी से ही कुद सीख लेता कि तब चुप रहना कितना जरूरी है, जब बोलने की जरूरत न हो. मैं कब बोलता हूँ? भूख लगे तो, प्यास लगे तो। याद आए तो। मजे में हूँ-'ट्वींट-ट्वींट'. तबीयत ठीक न हो या कोई दर्द हो तो चुप रहता हूँ. दर्द तो अकेले ही सहना पड़ता हैं न! फिर चीख-पुकार क्यों? इतना भी इन्सान की समझ में नहीं आता! बहुत श्रेष्ठ समझता हैं अपने-आपको. दूसरे प्राणियों

को कुछ समझता ही नहीं। शौक के नाम पर अपने अहम् की तुष्टि के लिए पशु-पक्षियों को कैद करके उन पर हुक्म चलाता है और कहता हैं- ''पाल'' रखा है। अरे, यें हमें पालने वाला कौन हैं? गनीमत है कि पालने वाला यह नहीं है। नही ंतो, पता नहीं और कितनी दुर्गति करता हमारी? कुत्ते-बिल्ली इसलिए पालता है कि उन पर धौंस जमा सके। और दुनिया को दिखाना चाहता है कि देखो, ये कैसे मेरा हुक्त बजा लाते हैं! कैसे मेरे इशारों पर जीते मरते हैं! हुक्म चलाने की, शासन करने की, अपनी आदम इच्छा को आदमी न जाने कब काबू कर पाएगा? इसीलिए तो निरंकुश घूम रहा है सारी सृष्टि में। मिल-जुलकर आदमी क्या खाक रहेगा, जबकि इसे दूसरा कोई ऐसा चाहिए जिस पर यह हुक्म चलाए! जब तक लोग हैं तो लोगों पर राज करता है। लोग न मिलें तो हम पशु-पक्षियों पर रौब गाँठता है।

जब लोगों ने हुक्म मानने से इंकार कर दिया यह कहते हुए कि जैसे तुम, वैसे हम। तो फिर तुम कौन होते हो, हम पर राज करने वाले? आदमी, आदमी पर हुकूमत करे? आदमी आदमी को गुलाम बनाए? धिक्कार हैं, ऐसे इन्सान को जो इन्सान का गुलाम होकर जिए!

और, इस तरह जब आदमी ने आदमी की हुकूमत के खिलाफ आवाज बुलन्द कर दी तो फिर आदमी हुक्म किस पर चलाता? अपने बड़प्पन का रौंब किस पर झाड़ता? तब शामत आई हम सीधे -सादे पशु-पक्षियों की। किसी ने मेरी बिरादरी को पिंजरे में डाला तो किसीने प्यारी मैना को। किसीने बंदर मामा को धर-पकड़ा तो किसीने रीछ दादा की नाकमें नकेल डाल दी। और, आदमी है कि हमें अपने इशारों पर नचाए जा रहा है। हमें नाचना है! हमारी मजबूरी है कि हम आदमी से कमजोर हैं। हमारे पास, आदमी जैंसा शरीर नहीं। हमारे पास, आदमी जैसा फितरती दिमाग नहीं। आदमी जैसा सख्त दिल नहीं''। हम आदमी जैसे मुँहजोर नहीं'। इसलिए, हम बेबस हैं। लाचार हैं। और आदमी! हम पर अत्याचार करता चला आ रहा है। मजे की बात तो यह है कि जिन लोगों ने बरसों की गुलामी के बाद आजादी हासिल की है, वे भी अपनी गुलामी के दिन भूल जाते हैं। हमें कैद करके

इंसान कुत्ते-बिल्ली इसलिए पालता है कि उन पर धौंस जमा सके. और दुनिया को दिखाना चाहता है कि देखो, ये कैसे मेरा हुक्म बजा लाते हैं! कैसे मेरे इशारों पर जीते मरते हैं! हुक्म चलाने की, शासन करने की, अपनी आदम इच्छा को आदमी न जाने कब काबू कर पाएगा?

रखते हैं। हमसे मनमानी करते हैं। आदमी को क्यों अहसास नहीं होता कि गुलामी में जैंसी मुझ पर बीती, वैसी ही इन पर भी तो बीत रही होगी।

काश! आदमी में यह चेतना आ जाए कि वह किसीको गुलाम बनाये ही क्यों? खुद भी स्वतंत्र रहे और दूसरे प्राणियों को भी स्वतंत्र रहने दे। जैसे-जैसे ऐसा होता जाएगा, वैसे-वैसे यह दुनिया सुधड़ होती जाएगी। सुंदर होती जाएगी। सरस होती जाएगी। जब न तो आदमी के ऊपर अपना शासक होगा। और तभी वह आजादी के सही मायने समझ पाएगा। तब उसकी समझ में आएगा कि आजाद रहने और आजाद रहने देने का आनंद क्या है? बंद आकाश और खुले आकाश का अंतर क्या है? तब आदमी महसूस करेगा कि जब वह हम पशु-पक्षियों को अपना गुलाम बनाता है तो हम पर और हमारे दिल पर क्या गुजरती है!''

''ट्वींट-ट्वींट। तोते की आवाज ने मेरी विचार-धारा भंग कर दी। उसकी सारी बातें मेरे दिमाग में गहरे पैठ गई थीं। मैं झटके से उठा। खूँटी पर से तोते का पिंजरा उतारा और चल पड़ा झुरमुट वाले खेतों की ओर। तोता बीच-बीच में ट्वींट-ट्वींट कर लेता था। मैं उसे पुचकारता जा रहा था। अब झुरमुट शुरू हो गये थे। पकी फसल की बालियाँ खाने के लिये हरे, चिकने, टिहुँकते तोते, झुरमुट से खेतों तक उड़ान भरते और चोंच में अनाज की बाली लिए लौटते। झुरमुट और खेत दोनों में, उनकी ''ट्वींट-ट्वींट के स्वर छाए थे। पिंजरे का तोता भी अब चहकने लगा था। मैं रूक गया और पिंजरे को अपने चेहरे के सामने ले आया और ''पट्टू-पट्टू'' पुकारने लगा। वह ट्वींट-ट्वींट करता जाता और पिंजरे में इधर से उधर, उधर से इधर व्याकुलता से धूमता जा रहा था। बीच-बीच में पंख भी फड़फड़ाता जाता। उसमें अप्रत्याशित चपलता आ गई थी। शायद यह दूसरे तोतों की आवाज का करिश्मा था, जो वह मुक्ति के लिए आतुर हो रहा था।

बस, मैंने ज्यादा देर करना ठीक नहीं समझा। पिंजरे का द्वार खोला और द्वार का मुंह झुरमुटों की तरफ करके प्यार से बोला- ''जा! उड़ जा! जा! शाबाश! जा! व्ह सतर्क-सा, द्वार तक आया। गर्दन बाहर निकालकर जाने क्या सूँधा, ट्वींट की, पंख फड़फड़ाए और जा उड़ा। एक छोटी-सी उड़ान। वह सामने के पत्थर पर जा टिका।

एक क्षप वहाँ रूककर पंख फड़फड़ाए और फिर उड़ान ली। यह उड़ान, पहली उड़ान से कुछ लम्बी थी। अब वह एक झाड़ी पर जा बैठा।

उसके बाद उड़ा तो एक जवान पेड़ की लचकदार डाल पर जा बैठा। उसके बैठते ही डाल झूलने लगी। उसने एक दो झूले खाए और फिर यह जा, वह जा; तोतों के झुण्ड में शामिल हो गया। मैंने सन्तोष की साँस ली।

लौटने लगा तो हाथ में खाली पिंजरे की तरफ ध्यान गया। एक पल पिंजरे को देखा और विचार कौंधा कि सारे खुराफ़ात की जड़ तो यह पिंजरा ही है। यह रहेगा, तो न जाने कब किस पोखी को कैद करने का लालच मन में आ जाए। मैंने घाटी की ओर एक सरसरी नजर डाली और पिंजरे को टांगने वाला हुक से पकड़ कर हाथ में तोलते हुए एक ही झटके में उसे घाटी की तरफ उछाल दिया। पहाड़ी ढलान पर शोर से लुढकता- उछलता पिंजरा, जल्दी ही मेरी आँखों से ओझल हो गया। पर लौटते समय, मैं खुद को ऐसा हल्का महसूस कर रहा था, जैसे मेरे भी पंख उग आये हों।

शादी में दो बाराती, दूल्हा कार चला पहुंचा ससुराल

30 अप्रैल 2021. एक तरफ कोरोना के नियम उल्लंघन पर दंड लगाए जा रहे है, गिरफ्तार किए जा रहे है. उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जनपद के प्रीतम नगर मुहल्ले के निवासी यतीन्द्र कश्यप एवं जलपरी तरुणा निषाद की शादी में दिखी. दो बारातियों (यानि स्वयं कार चलाकर दूल्हा और उसकी बहन) के साथ बारात पहुंची. वहा ससुराल में यतीन्द्र कश्यप के ससुर त्रिभुवन निषाद ने तिलक लगाकर अभिनंदन किया. यतीन्द्र और तरुणा एक दूसरे को जयमाल पहनाकर एक दूजे के हो गए. शादी का लाइव प्रसारण हुआ दोस्तों, रिश्तेदारों और घर वालों के लिए.

1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से मासिक के रूप में निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये,
वार्षिक–150/रुपये,
पंचवर्षीय–750/रुपये,
आजीवन–1500/रुपये, संरक्षकः 11000/रुपये

खाता संख्या–66600200000154, आईएफएससी कोड–बीएआरबी0वीजेपीआरईई (BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या हवाट्सएप कर देवें।

पताः एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949, ई–मेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

अनपढ़

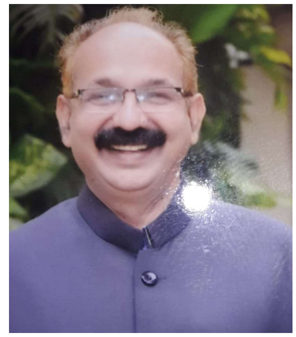

-डॉ० अशोक कुमार शर्मा,
पटना, बिहार

मनोज और नवीन अपने बाबूजी के साथ रहते थे. मनोज एक सरकारी कार्यालय में बड़ा पदाधिकारी था और नवीन अपने पढ़ाई के अंतिम वर्ष में था. घर में बड़ा अच्छा वातावरण था परंतु बेटी की इच्छा पूरी नहीं होने के कारण कनक और रामपाल को अक्सर यह बात एक सरिया की तरह चूभती रहती था.

घर में मनोज तो आकर्षक व्यक्तित्व वाला बेटा था, इस कारण उसकी नौकरी लगते ही बड़े-बड़े परिवारों से रिश्ते आने लगे थे. घर में सभी लोग इससे परेशान थे और जल्द से जल्द मनोज की शादी कर देना चाहते थे, परंतु मनोज को शहर की पढ़ी-लिखी एक लड़की 'शिखा' पसंद आ गई थी जो एक बैंक में अधिकारी थी.

घर में खुशी-खुशी सब कुछ चल रहा था, मनोज की शादी हो गई अब कनक और रामफल भी नई बहू के साथ समय गुजरने लगी. चूंकि नवीन पढ़ने में तेज था, इस कारण रामफल को नवीन से ज्यादा उम्मीद थी. मनोज की शादी के बाद मनोज के ससुराल वाले लोगों का रामफल के यहां आना -जाना लगा रहता था, इसी बीच मनोज की पत्नी शिखा की मौसेरी बहन 'महक' का भी अपने जीजू मनोज के यहां आना-जाना लगातार रहता था.

घर के सभी लोग भी 'महक' से भलीभांति परिचित हो चुके थे, शिखा भी मन ही मन अपनी मौसेरी बहन 'महक' को अपनी देवरानी बनाना चाहती थी. कनक और रामफल को कोई दिक्कत नहीं थी, परंतु सबसे बड़ी परेशानी थी नवीन का शादी के लिए तैयार नहीं होना.

एक दिन रामफल ने पूछ ही लिया, क्यों बेटा नवीन, शादी-विवाह का क्या तुम्हारा इरादा है?

नहीं, पिताजी अभी नहीं, अरे नवीन ठीक है, लेकिन तुम्हारी मां तो हमें खूब तंग करती है, जा और उसे तु समझा, तुम्हीं से वह समझेंगी!

हां, पिताजी मैं अम्मा से बात करूंगा.

एक बार अपनी पढ़ाई के सिलसिले में नवीन का साथी रमेश नैनीताल गया था, नैनीताल में रमेश की शादी की बातचीत चल रही थी, रमेश वास्तव में में अपनी होने वाली पत्नी को देखने के लिए अपने मित्र नवीन को भी वहां साथ ले गया था, कारण था कि रमेश अपने मित्र नवीन पर बहुत विश्वास करता था.

रमेश अपनी होने वाली पत्नी को देखने के सिलसिले में एक लड़की का जिसका रमेश के होने वाले ससुराल में काफी आना-जाना दिख रहा था को नवीन एक ही वार में मोहित हो गया था क्यों वह लड़की भी काफी सुंदर थी.

लड़की को देखते ही नवीन ने निर्णय ले लिया था कि वह किसी भी परिस्थिति में वह उसी लड़की से शादी करेगा. नवीन भी रमेश के होने वाले ससुराल के लोगों की मदद से उस लड़की का नाम भी पता लगा लिया था.

लड़की नीता थी, लड़की नीता भी रमेश की होने वाले ससुराल के बगल के मास्टर साहब की बेटी थी.

हालांकि वह कम पढ़ी-लिखी थी परंतु देखने में काफी सुंदर और सुशील. कोई भी एक पल में उसे देख कर ही मंत्र मुग्ध हो सकता था, ऐसी खुबसूरत थी वह लड़की!

रमेश की शादी के बाद वह भी अक्सर नैनीताल अपने दोस्त के ससुराल आता -जाता रहता था. साथ तो मित्र के साथ आने का बहाना था, परन्तु नीता की याद उसकी जान नहीं छोड़ रही थी, और वह एक दिन संध्या समय- अपने पिताजी को जाकर कह ही दिया, पिताजी आप शादी की बात जो कह रहे थे,

हां तो क्या बात है बेटा?

नहीं पिताजी मैंने एक लड़की पसंद कर लिया है, अगर आप चाहें तो मेरा रिसता वहां आप तय कर सकते हैं.

अरे नवीन खुलकर तो बताओ, कौन है? कहां की लड़की है?

उसके माता-पिता कौन है और कहा के रहने वाले हैं?

एक बार में इतने प्रश्नों के उत्तर के लिए नवीन तैयार नहीं था, फिर मां के सामने उसने सही तस्वीर रख दिया. नवीन अपने माता-पिता को समझा-बुझाकर नीता से अपनी सगाई पक्की करा लिया था. घर में नवीन का नीता से उसकी सगाई की बात सुनकर भाभी 'शिखा' को पसंद नहीं आईं. शिखा को नीता से नवीन की सगाई अच्छी नहीं लगी, फिर भी रामफल और कनक के आगे वह कुछ बोलने की स्थिति में नहीं थी. चूंकि शिखा

नौकरी करती थी, इस कारण उसकी घर में धाक थी.

परन्तु शिखा अपनी इस हार का बदला हर समय नीता से चुकाती रहती थी. नवीन की पत्नी का मजाक उड़ाना, यह एक आम बात बन गई थी, परंतु न तो नवीन और न ही उसकी पत्नी नीता ने ही इसका बुरा कभी माना.

एक दिन मनोज अपने सरकारी काम से शहर से बाहर गया गया हुआ था. शिखा शहर के ही एक बड़े सरकारी बैंक में पदाधिकारी थी और वह अक्सर अपनी स्कूटी से कार्यालय जाती थी. एक दिन रास्ते में किसी कार वाले ने धक्का मार दिया, जिसके कारण उसे काफी चोट लगी परंतु हेलमेट के कारण उसका सर सुरक्षित रहा और एक सप्ताह तक वह अस्पताल में भर्ती रही. जानबूझकर यह सूचना मनोज को नहीं दी गई, क्योंकि सभी घर वाले जानते थे कि सूचना मिलते ही मनोज काफी परेशान हो सकता था, और रामफल भी यह बात जानते थे कि मनोज बहुत जल्दी घबरा जाता है.

नवीन और उसकी पत्नी पत्नी नीता बीमारी की हालत में शिखा की खूब देखभाल करती रही. शिखा तो अक्सर नीता को भला-बुरा कहती रहती थी परंतु नीता कभी उसका बुरा नहीं मानी और एक सप्ताह बाद शिखा की अस्पताल से छुट्टी मिल गई. अस्पताल में शिखा के इलाज के समय शिखा का एक मात्र सहारा नीता ही रही और एक बड़ी बहन मानकर सेवा की. अस्पताल से छुट्टी मिलने के दिन तक शिखा का एक मात्र सहारा नीता ही रही.

वह हर पल अपनी बड़ी बहन मानते हुए शिखा को उठाने-बैठाने का ख्याल रखती थी.

शिखा को कभी पता ही नहीं चला कि जिसे वह कम पढ़ी-लिखी अनपढ़ कहा करती थी, वह तो पढ़ी-लिखी देवरानी है भी उपर निकली.

शिखा बार बार यही सोच रही थी कि न जाने हमने उसे कितनी बार अन्तर्मन से कोसा था!

शिखा यह बात अन्दर से सुनकर और छानकर अपने को मन ही मन बहुत कोस रही थी. वह सोच रही थी क्या यह सेवा उसकी ममेरी बहन कर पखती? वह सोच रही थी इतनी सेवा महक कभी नहीं उसकी करती.

मनोज भी अपू टूर से आ गया और पूरी कहानी जानकर बहुत गुस्सा भी हुआ परंतु पिता रामफल के द्वारा बताए कारणों से बह सन्तुष्ट हो गया. उसे भी अपने भाई नवीन पर पूरा भरोसा था. शिखा ठीक हो चुकी थी. उसने पूरी कहानी मनोज को सुना दी थी, वह भी अपने भाई नवीन और उसकी पत्नी नीता के इस आचरण से काफी खुश दिख रहा था.

एक दिन बैंक से शिखा के बैक में जरुरी मीटिंग की बात सुनकर नीता ने शिखा के लिए जल्दी जल्दी टीफीन तैयार की और उसकी स्कूटी में डालकर उसे छोड़ने बाहर गेट तक गई, कनक, रामफल, मनोज और नवीन यह सब देख रहे थे, परंतु शिखा को अपनी गलती का एहसास हो रहा था और सोच रही थी कि मैं कितनी बेवकूफ थी और कम पढ़ी-लिखी व अनपढ़ मानकर नीता का अपमान करती थी. उसे बहुत अफसोस हो रहा था कि आखिर मैने ऐसा क्यों किया? उसके दुःख के समय हर पल एक सहारा बनी रही नीता कितनी अच्छी है.

शिखा बार-बार अपने को कोस रही थी कि क्या केवल पढ़ी-लिखी लड़की ही समाज का सहारा होती है? क्या पढ़ने से ही संस्कार मिलते है?

क्या पढ़ाई होने पर ही घर की गृहस्थी चलाईं जा सकती है? क्या पढ़ी लिखी लड़की ही सर्वोत्तम है?

आज एक अनपढ़ लड़की नीता ने उनकी आंखें खोल दी थी.

ऐसी सोच के साथ धीरे-धीरे वह अपनी स्कूटी पर बैठकर बैंक के रास्ते जाने के क्रम में सोचती हुई अपनी ऑफिस की ओर जाने लगी, क्या मैं नीता की जगह होती तो क्या मै ऐसा कर पाती? आज शिखा को एक अनपढ लड़की नीता ने जीवन में एक अनपढ़ लड़की का महत्व जो बतला दिया था!

आत्मविश्वास

आज विषम परिस्थितियों में
आत्मविश्वास हमें प्रेरणा देता है
सकारात्मक विचार मन को
प्रफुल्लित करता है.....
आत्मविश्वास कभी खोना नहीं
सृजनात्मक कार्य करते रहिये
समय बड़ा ही कठिन है
सकारात्मक बने रहिये.....
अपनों का अपनापन बहुत हैं
साथ निभाते चलते रहिये,
आत्मविश्वास ही सब कुछ है,
दूरियां कुछ दिनों की हैं....
क्या कभी किसी ने सोचा था
जीवन में ऐसा दिन भी आयेगा
सांसों को सांसों की जरूरत,
होगी ये सोच ना पाया था..
कितने अपने चले गए, देखते रहे
दुखद स्थिति मन को बोझिल,
कर गए विश्वास नहीं होता
ऐसी विशम परिस्थिति आयी....
कोरोना को हराना है हमें
आत्मविश्वास सबमें जगाना हैं,
सकारात्मक सोच लाना है
आत्मविश्वास बनाये रखना हैं।

डा.मुक्ता कान्हा कौशिक
सहायक प्राध्यापक, ग्रेसियस
महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

शाकाहार

तुलसी जैसे महा-संत थे,
वाचक शाकाहार के।
उठो जरा तुम पढ़ कर देखो,
गौरवमय इतिहास को।
आदम से आदी तक फैले,
इस नीले आकाश को।
दया की आँखें खोल देख लो,
पशु के करुण क्रंदन को।
इंसानों का जिस्म बना है,
शाकाहारी भोजन को।
बंद करो ये लहूधार का,
जीवन का अवेध व्यापार।
मूक पशु की पीड़ा समझो,
सभी अपनाओ शाकाहार।
अरे मनुज ने मानवता तज,
पशुता का यह पीड़ा मार्ग चुना।
नीच कर्म यह महापाप है,
सब पापों से कई गुना।
दर दर भटके शांति खोजता,
मानवता के जुबां नारों में।
उलझा तीन टके के पीछे,
पशु बध के व्यापारों में।
कहाँ शुकून मिलेगा हमको,
जब हर घर में चित्कार है।
लाल लहू से जीभ रंगी है,
अरु हाथों में तलवार है।

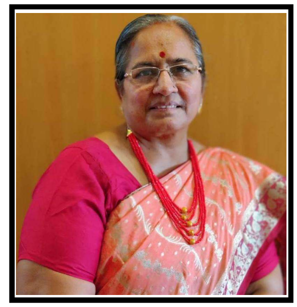

चोट यदि मुन्ने को लगती,
तब कितनी पीड़ा होती है।
क्यों कोई फर्क नहीं पड़ता,
जब बकरे की अम्मा रोती है।
कई मांओं की छिपी व्यथा है,
तेरी जिव्हा शटरस थाली में।
कई वर्षों की लिखी कथा,
तेरे होटों की इस लाली में।
मंदिर में पूजे गोमाता,
कब घर में आदर पाती है।
दूध पिलाना बंद करे तो,
गाय कतल की जाती है।
आज यदि पषु रोता है तो,
कल तेरी भी बारी है।
इन तलवारों की धारों की,
नहीं किसी से यारी है।

डा.ललिता बी.जोगड़,
मुंबई, महाराष्ट्र

दरख्त

एक टूटा सूखा सा दरख्त,
खड़ा था किसी सुनसान राह।
याद करता अपना सुनहरा वक्त।
जब वह था किसी का बसेरा,
पंक्षी बनाते थे उस पर डेरा।
सुखद था सहज था,
उनके लिए वह आशियाना।
बच्चों की ललचाई नजरों का,
वह था निशाना।

आज हो गया, वक्त की मार से सख्त।
एक टूटा सूखा सा दरख्त।।

फलों से भरा, पत्तियों से हरा,
कुछ छिपायें, अपने में राज गहरा।
तब करते थे लोग उसे पसंद।
हमेशा रहा करता थे, लोग चंद।
खा गया उन खुशियों को ये पतझड़।
एक टूटा सूखा सा दरख्त।।
सूखने लगा हर वक्त हर पल,
उसका सुख बन गये उसका कल।
पक्षी छोड़ गये अपना डेरा।
फैल गया चारों ओर अंधेरा।
जर्जर हो रहा था, उसका शरीर।
टूट रहा था, उसका धीर।
खत्म हो रही थी,
उसके आस पास की चुहल।
हो गया था निष्ठुर,
उसके लिए समय भी कमबख्त।
एक टूटा सूखा सा दरख्त।।
आज काटने की उसे सोच रहे सभी।
रुकता नही वहाँ अब कोई राही।
आज वह किसी काम नही आता।
शायद तभी वह लोगो को नही भाता।
आज है उसका दुश्मन हर शख्स।।
एक टूटा सूखा सा दरख्त।।

-सुमति श्रीवास्तव,
पुत्री श्री शिव कुमार लाल, सिटी स्टेशन के पास, न्यू कालोनी, हरिबंधनपुर, पो.कचहरी जौनपुर, उ.प्र.

जब सन्नाटा चीखता है

जब सन्नाटा चीखता है
तो चीखती हैं
साथ ही साथ उनके
दबी, कुचली, सहमी सी
कुछ आवाजें भी
जो बड़ी बड़ी हवेलियों में
वक्त के गहवर में
गुमनाम सी हो गई थीं
जब सन्नाटा चीखता है
तो चीखती हैं
साथ ही साथ उनके
अनगिनत बेबस, लाचार
बालकों की क्षुधाएं
जो फुटपाथों पर
रात के अंधेरे में तलाशते हैं,
पेट भरने को रोटियाँ
जब सन्नाटा चीखता है
तो चीखती हैं
संजलि और निर्भया जैसी
बेटियों की वीभत्स,
चीत्कार करती वेदनाएं
जो वक्त की दीवार पे
आधुनिक सभ्य आदिम मानव की
कलंकित कथा का हस्ताक्षर हैं
जब सन्नाटा चीखता है
तो चीखती हैं
साथ ही साथ उनके
वृद्धाश्रमों की
सिसकती आवाजें
जो माँगती हैं हम सभ्य मानवों से
अपने त्याग, बलिदान और
गर्भस्थ रक्त बिंदुओं का हिसाब
जब सन्नाटा चीखता है
तो अकेले सन्नाटा
कहाँ चीखता है?
चीखती है साथ ही साथ
मेरे कलम की तलवार की धार
जो लिखती है, हम
सभ्य, सुसंस्कृत, संवेदनहीन
मानवों का
आचार, विचार, व्यवहार
एवं व्यभिचार
जब सन्नाटा चीखता है...

-अर्चना कृष्ण पाण्डेय
मनीषी बालिका इण्टर कॉलेज,
गौरीगंज, अमेठी, उत्तर प्रदेश

दर्द भारत का

उछलते कूदते गाते हुए,
मैंने देखा था,
झरोखे से तुम्हें आते हुए।
फौजी आया फौजी आया,
गाँव में,
हर ओर यही हलचल थी,
मन किया,
दौड़कर समां जाऊँ
तुम्हारी बाहों में
पर हाय बाहर कैसे आती,
पाँव में जो,
शर्मो हया रीत रिवाज की,
पायल थी।
तुम आँगन में थे,
मैं तुम्हें देख रही थी,
दरवाजे की आड़ से,
लुका छिपी खेलती नजर,
टकराई थी,
तुमने देखा था,

बड़े ही प्यार से।
हाथों में तिरंगा लिए,
कमरे में तुम आए थे,
भारत माँ को अपनी माँ,
और उस तिरंगी छड़ी को,
मेरी सौतन बताये थे।
आज भी तुम आए हो,
तिरंगा साथ आया है,
पहले तुम तिरंगे को,
उठाते थे,
आज तिरंगे ने,
तुम्हें उठाया है।
तुम्हें देख लगता है,
हंसोगे बोलोगे खेलोगे,
प्रेम की नई सुर तान,
छेड़ दोगे,
और आज जाने सेय
फिर रोका,
तो नया देशगान,
छेड़ दोगे,
शहीद तुम हुए,
बेजान मैं हो गयी,
दफ्न तुम हुए,
शमशान मैं हो गयी,
सुहागिनें भी मुझको देख,
मुँह मोड़ लेती हैं,
सास ननद भी,
रात की काली अकेली,
तन्हाई में,
मुझको अकेला छोड़,
देती हैं,
तुम्हारी फोटो को,
बिस्तर पर लिटा,
तुम्हारे पास होने का,
एहसास करती हूँ,
मैं एक महान,
देश भक्त की बेवा हूँ,
देश के लोगों पर,
बड़ा ही विश्वास करती हूँ,
पर विश्वास की हर डोर,
तार तार हो गयी,
और कल शाम,
चार निहत्थो के सामने,
एक महान शहीद की बेवा,
लाचार हो गयी,
कल शाम चार अजनबी,
दरवाजा खटखटाये थे,
माँ जी पानी दे दीजिए,
कह घर में घुस आए थे,
मैं चार लोगों से घिरी,
पल्लू बचाती रह गयी,
आबरू को मेरी,
वो सब कुचल कर,
चल दिए,
भारत माँ की रक्षा के लिए,
तुमने जान दी,
मेरे हमसफर,
भारत माँ के ही कुलालों ने,
माँ शब्द के,
सब मायने बदल दिए
सब मायने बदल दिए।।

–श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव 'वान्या'
जानकीपुरम, लखनऊ, उ.प्र.

प्रयागराज कुंभ

दो हजार उन्नीस वर्ष, मंगल को प्रारभ।
मंगलमय इस वर्ष में, प्रयागराज का कुंभ।
प्रयागराज का कुंभ, त्रिवेणी संगम तट पर।
गंगा यमुना सरस्वती के, पावन तट पर।
ब्रह्मा जी प्रथम यज्ञ, था किया यहां पर।
अमृत की बूंदें छलकी, इस स्थल पर।
देवता तैंतीस कोटि उपस्थित, कुंभ पर्व पर।
करोड़ो भक्तों का, अद्भुत संगम इस तट पर।।
विश्व का सबसे विशाल, यह धार्मिक मेला।
गिनीज बुक में अंकित हो गई, यह शुभ बेला।।
विभिन्नता में एकता का, हुआ है दर्शन।
भारतीय संस्कृति के, विविध रूप का यहाँ प्रदर्शन।
करोड़ों भक्तों ने किया, कुंभ पर्व स्नान।
किन्नर अखाड़ा ने किया, प्रथम बार स्नान।
प्रधानमंत्री मोदी जी ने, किया संगम स्नान।
मुख्यमंत्री योगीजी ने, किया कैबिनेट संग स्नान।।
कई राज्यपाल और मुख्यमंत्री, आये संगम तीर।
बालीवुड के कलाकार भी, पहुंचे संगम तीर।
भक्तों ने हेलीकाप्टर से, मेले का किया दर्शन।
अलौकिक छटा देख तीर्थराज की पुलकित था तन मन।।
पूरे विश्व में कुंभ का, हुआ प्रचार प्रसार।
प्रमुख राष्ट्रों के ध्वज लहराये, संगम पर पहली बार।
पुष्प वर्षा से स्वागत भक्तों का, हुआ है पहली बार।।
अद्भुत अलौकिक अविश्सनीय, कुंभ था अबकी बार।।
पूरे विश्व में मेले का, आनन्द उठाया।
संगम में स्नान दान, पुण्य कमाया।
प्रयागराज का गौरव सारे जग में पहुंचाया।
कुंभ एवं संगम नगरी को, स्वच्छ बनाया।।
आने वाले भक्तों का, सत्कार किया है।
प्रयागवासियों ने भी, अपना उद्धार किया है।
माँ गंगा यमुना की कृपा रहे, सदा हम पर।
बहती रहें सतीश, निरन्तर इस स्थल पर।।

–सतीश कुमार मिश्र 'सत्य',
एम.आई.जी-तृतीय, बी-12, पीडीए कॉलोनी, नैनी,
प्रयागराज, उ.प्र.

मैं प्राण फूकने आई हूं

मैं प्राण फूकने आई हूं, मैं जान फूकने आई हूं।
मैं शांति शांति का नहीं, नाद का शंख बजाने आई हूं।
तुम सोच रहे होगे, कविता में कुछ अल्हड़ भाषण होगा।
तुम सोच रहे होगे, गोरी का पायल और काजल होगा।
तुम सोच रहे हो, शायद कि कुछ प्रेम प्यार की बातें हो,
तुम सोच रहे हो शायद कि चंदा और चांदनी रातें हो,
इन सोई भावों की वीणा में झंकार चढ़ाने आई हूं।
मैं शांति शांति का नहीं, नाद का शंख बजाने आई हूं।

छोड़ो यह मलमल का आसन, छोड़ो प्रिय का प्रिय आलिंगन,
छोड़ो यह दूध कटोरा अब, तोड़ो रिश्तों का अवगुंठन,
इन बंधी हुई जंजीरों से मैं तुम्हे छुड़ाने आई हूं।
मैं शांति शांति का नहीं, नाद का शंख बजाने आई हूं।

चल पड़ो तुम्हारी आहट से तूफानों का दम हिल जाए,
इन सुर्ख गुलाबी आंखों में सागर की लहरें बल खाएं,
हर ओर छनन हर ओर घनन, उस पार तबाही मच जाए,
कर उठो तांडव शिव जैसा, बुझी मशालें जल जाएं,
मै आग बुझाने नहीं आज लगाने आई हूं,
मै शांति शांति का नहीं, नाद का शंख बजाने आई हूं।

और अगर तुम डरते हो तोपों बारूद के गोलों से,
और अगर तुम डरते हो, इन जेहमत भरे झमेलों से,
तो चलो उधर इस आंगन में जहां मां की ममता रोती है,
जहां सोई चूड़ी की खनखन, पापा की बिटिया सोती है
मै तुम्हे बताने नहीं, तुम्हे बुलाने आई हूं,
मै शांति शांति का नहीं नाद का शंख बजाने आई हूं।।

-श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', रायबरेली, उ० प्र०

चुल्लू भर पानी में डूब के मर गया होता

यदि तेरी जगह कोई और लड़का होता।।
तेरे पाप का घड़ा धीरे धीरे भर रहा है।
अपने नाम झूठ से कराई दौलत के कागजात पढ़ रहा है।।
इन कागजों को मत पढ़,
यदि पढ़ना था तो माँ बाप की आँखों को पढ़ता
जब तू उन्हें वृद्ध आश्रम में छोड़ आया।
कम समय में ही तुमने
उनका सारा धन सम्भाल लिया।
आज उन्हें तुम्हारी जरूरत थी तो
तुमने उन्हें निकाल दिया।।
इन कागजों को शहद लगाकर चाटले
सब धरा धराया रह जायेगा।
तू एक दिन अपने किये पर बहुत पछतायेगा।।
आज जो तूने किया कल तेरे संग भी वही होगा।
तेरे बच्चो का ढंग भी वही होगा।।
पेड़ बबूल का बोओगे तो आम नही होगा।

माँ बाप की बद्दुआ लेकर चले हो सोने का महल खड़ा करने,
ये महल एक दिन ढह जायेगा।
अहंकार तो रावण का भी टूटा था
वैसे ही तेरा भी टूट जायेगा।।

आज तेरी बहन बेटा बनकर आश्रम से,
अपने माँ बाप को अपने घर ले जा रही है।
अपना रिश्ता खत्म आज से, गिरे हुए इंसान,
तुझे अपना भाई कहने में भी मुझे शर्म आ रही है।
मेरे ऊपर दोनों का आशीर्वाद है, प्यार बरसेगा।
प्रोपर्टी के लालची, तू तो उन्हें कंधा देने को भी तरसेगा।।

-श्रीमती पूनम रानी शर्मा, कैथल, हरियाणा

हिन्दी सूफी काव्य में धर्मनिरपेक्षता

'धर्म' शब्द में जीवन के भौतिक और पारलौकिक दोनों ऐश्वर्य के साधनों का समावेश माना जाता है. 'धर्म' शब्द की धारणा इतनी व्यापक है कि इसमें आध्यात्मिक उन्नति के सभी साधनों और आचरणों का समावेश हो जाता है. धर्म उन शाश्वत गुणों के समुच्चय को कह सकते हैं जिसके द्वारा मानव सच्चाई के मार्ग में प्रवृत्त होकर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता जाता है.

-प्रा० डा. अंबेकर वसीम **फातेमा अब्दुल अजीज,** सहायक प्राध्यापक, अहमदनगर, महाराष्ट्र

सूफी काव्य की वास्तविकत परखने पर यह स्पष्ट होता है कि सूफी साधना पद्धति यह कोई इस्लाम से अलग धार्मिक विचार है न इसका राजनीति से सम्बन्ध है. बल्कि वह इस्लाम का, उसकी मूल आस्था और विश्वास तथा प्रत्यक्ष आचरण का मानसिक और रूहानी पहलु है जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध व्यक्ति और समाज के नैतिक उत्थान से है, जिसके आधार पर वह अपना लौकिक तथा पारलौकिक जीवन सफल कर सकता है. सार्थक धर्म का उद्देश्य भी यही है.

मनुष्य जाति की सामाजिक अवस्था के प्रथम चरण में 'धर्म' की कोई विशिष्ट संकल्पना नहीं थी. नीति और अनीति के भी कोई मानदण्ड निर्धारित नहीं थे. लेकिन जैसे-जैसे समाज विकसित होता गया और आपसी सामाजिक व्यवहार बदले गए, जीवन की नीति और रीति निर्धारित करने के लिए धर्म की संकल्पना निर्माण हुई. सर्व प्रथम यह विश्वास निर्माण हुआ कि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी भक्ति के लिए निर्माण किया है. सूफी-साधना पद्धति में इसी बात को प्रधानता दी गयी है कि ईश्वर एक हे और उसने ही विश्व की तथा सर्व मनुष्य की निर्मिति अपनी आस्थापूर्ण भक्ति के लिए की है. इस महत्वपूर्ण तथ्य को जान लेने के बाद ही विविध धर्म के आस्थाजनक स्वरुप को समझ सकते हैं.

आज सारे विश्व में किसी न किसी रूप में धर्म का आचरण कार्यरत है. इसका महत्वपूर्ण कारण इस तरह है कि युगानुसार बदलती हुई परिस्थिति में परिवर्तन होना यह एक स्वाभाविक नियम है. इसी परिवर्तन के कारण मनुष्य की सोचने की निर्णय क्षमता और आचरण पद्धति भी लगातार बदलती ही रहती है. इसी कालावधि में वैज्ञानिक प्रगति और संपर्क-साधनों की विपुलता के कारण सामाजिक सम्बन्धों का सतत विकास होता गया है. कुछ पुरानी अनावश्यक बातों को त्याग कर नई आवश्यक और उपयोगी बातों को अपनाया जाता रहा है. कालानुरुप सामाजिक प्रगति इसे ही कहते हैं.

मानव के पारलौकिक चिन्तन और आध्यात्मिक दृष्टि को 'दर्शन' कहा जाता है. जिसके द्वारा आत्मा, परमात्मा और सृष्टि के गूढ़ तत्त्वों का मनन-चिन्तन तथा जगत् के गूढ़ तत्त्वों का साक्षात्कार होता है. दर्शन के अन्तर्गत ब्रह्म, जीव और जगत् की स्थिति एवं कारणों की मीमांसा होती है. इसी के साथ जीवन की मुक्ति का मार्ग एवं साधनों का विश्लेषण होता है.

भारतीय दर्शन के मूल स्त्रोत उपनिषद है. शंकराचार्य ने वेदान्त में अद्वैतवाद का बड़ा ही सबल एवं तर्कपूर्ण प्रतिपादन किया है. आगे चलकर शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त भारतीय दर्शन का प्रतीक बन गया है. 'धर्म' शब्द में जीवन के भौतिक और पारलौकिक दोनों ऐश्वर्य के साधनों का समावेश माना जाता है. 'धर्म' शब्द की धारणा इतनी व्यापक है कि इसमें आध्यात्मिक उन्नति के सभी साधनों और आचरणों का समावेश हो जाता है. धर्म उन शाश्वत गुणों के समुच्चय को कह सकते हैं जिसके द्वारा मानव सच्चाई के मार्ग में प्रवृत्त होकर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता जाता है.

इसी कारण धर्म की सीमा मनुष्य के आचरण पक्ष को अपने परिवेश में ग्रहण करती है. मनुष्य सांसारिक आचरणों को लोकहितवादी स्वरुप प्रदान करता है. जिसके कारण उसे परलोक

सुख की प्रेरणा प्रदान होती है. यही दोनों वस्तुएँ धर्म की मुख्य प्रतिपाद्य हैं.

(क) सूफी दर्शन-प्रेम की पीरः हिन्दी सूफी काव्य में दर्शन की इस्लामपरक मान्यताओं के अतिरिक्त हिन्दू दर्शनों का प्रभाव भी है. विशिष्ट दार्शनिक मतवादों की बारीकियाँ तो उनमें नहीं है, पर उपनिषदों में प्रतिपादित ब्रह्म, जीव, जगत् और उनके परस्पर सम्बंध के विषय में अद्वैतपरक उक्तियाँ उनमें मिलती हैं. साथ ही योग साधना के पारिभाषिक शब्दों एवं साधनों के अंगो की झाँकियाँ भी मिलती हैं. सूफी मत को आलोच्य कवियों ने हिन्दू दर्शन से अविरोधी बनाकर अपने काव्य के द्वारा प्रचारित करने का प्रयास किया है. विवेचन इस प्रकार है-

ब्रह्म : हिन्दी सूफी कवियों ने ब्रह्म का जो निरूपण किया है उसमें इस्लाम धर्म, सूफी दर्शन एवं उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म के रूपों की छाप दिखाई देतीी है. इस्लाम और हिन्दू दर्शन में ब्रह्म के प्रतिपादन में जहाँ समानताएँ मिलती हैं, उन्हें विशेष रूप से इन कवियों ने ग्रहण किया है. हिन्दू दर्शन का प्रभाव अभारतीय सूफी तत्त्व-चिन्तकों पर भी पड़ा है. बायजीद बिस्तामी, मंसूर हल्बाज, इब्नुलल अरबी आदि के विचारों से हिन्दू दर्शन की समानताएँ सहज ही देखी जा सकती है. हिन्दी सूफी कवियों पर कुछ तो इन तत्त्वचिन्तकों का प्रभाव पड़ा है और कुछ अपनी ग्रहणशील वृत्ति के कारण उन्होंने भारतीय दार्शनिकों और साधकों से सीधे ग्रहण किया है. उपनिषदों में ब्रह्म का सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में निरूपण हुआ है. सगुण ब्रह्म की सृष्टि का निर्माता, पालक और संहारक ईश्वर ही है. अर्थात कहा गया है कि यह जगत् ब्रह्म से उत्पन्न होता है और उसी में लीन होता है. तथा उसी के कारण स्थिति काल में प्राण धारणा करता है. माण्डुक्य उपनिषद में कहा गया है कि वह ब्रह्म सबका अधिपति है, सर्वज्ञ तथा अन्तर्यामी है, वह सबका कारणा है, उसी से सब जीव उत्पन्न होते है और उसी में लीन हो जाते है. इस्लामी दर्शन में भी सगुण का यह रूप हमें मिलता है. कुरआन में भी उसे सृष्टि का निर्माता, पालकक और संहारकर्ता कहा गया है. कुरआन में कहा गया है कि वह ईश्वर जिसमें भूमि में जो कुछ है वह तुम्हारे लिए बनाया है. ब्रह्म के लिए कहा गया है कि वह आदि से अन्त तक है. वह सब चीजों का जानकार है. ब्रह्म हमारे सामने, पीछे बाई और दाई ओर है. ऊपर और नीचे भी है और सर्वश्रेष्ठ है.

इस प्रकार सगुण ब्रह्म का यह रुप हिन्दू और इस्लाम दर्शन में सामान्य रूप से मिलता है. सूफी कवियों ने ब्रह्म का स्रष्टा के रूप में व्यापक वर्णन किया है. 'चन्दायन' में वह जगत् की सम्पूर्ण वस्तुओं का सिरजनहार कहा गया है. 'मृगावती' में वह सारी सृष्टि का निर्माता कहा गया है. जायसी ने 'पद्मावत' में इन्हीं विचारों को प्रस्तुत किया है. सृष्टि के रचनाकार ब्रह्म द्वारा पहले मुहम्मद पैगम्बर के रूप में संसार में ज्योति प्रकाशित करने की बात कही है. इस प्रकार सूफियों का ब्रह्म इस्लामी ब्रह्म ही है, पर उसके गुण और लक्षणों के निरुपण में इन कवियों ने हिन्दू दर्शन की ब्रह्म सम्बन्धी मान्याताओं को भी पूर्ण रूप से आत्मसात किया है. यदि मुहम्मदिया नूर से सम्बन्धित प्रकरणों को इन काव्यों से हटा दिया जाए तो इनके ब्रह्म का निरुपण उपनिषदों में निरुपित ब्रह्म के लक्षणों के समान ही है. कठोपनिषद में उस निरुपाधित और वर्णनातीत ब्रह्म को अशब्द, अस्पर्श, अरुप, अव्यय, अरस, अंगधवत, अनादि तथा अनन्त कहा गया है. बृहदारण्यक उपनिषद में कहा गया है कि वह स्थूल नहीं है, न उणु है. वह -हस्व या दीर्घ नहीं है. न रूखा है न चिकना है. वह छाया से भिन्न है और अंधकार से पृथक है. रस और गन्ध से विहीन है.

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

ईमेल :

vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

प्राण तथा मुख से उसका सम्बन्ध नहीं है. वह परिणाम रहित है. कठोपनिषद के अनुसार जिसे वाणी कह नहीं सकती पर जिसकी शक्ति से वाणी बोलती है, उसे तुम ब्रह्म समझो. ईशावास्योपनिषद के अनुसार यह परमात्मा चलता भी है, नहीं भी चलता है. वह दूर भी है और समीप भी है. वह अन्तर में भी है और बाह्य में भी. वह न स्त्री है, न पुरूष है, न नपुंसक है.

इस निषेधात्मक प्रणाली से हिन्दी सूफी कवियों ने भी ब्रह्म का वर्णन किया है. कुतुबन ने लिखा है कि वह अलख निरंजन है, जो देखा नहीं जा सकता. उसे परमेश्वर का रूप न स्त्री का है, न पुरूष का है. उसके न माता न पिता और न कोई बन्धु है. जायसी ने लिखा है कि अलख, अरूप और अबरन है. वह सब में है और सब उसमें है. वह प्रकट, गुप्त और सर्वव्यापी है. न उसका कुटुम्ब है, न कोई उसका सम्बन्धी है. उसमें न किसी का प्रजनन किया है और न किसी ने उसे जन्म दिया है. उसने संसार में सब कुछ बनाया है लेकिन किसी ने उसे नहीं बनाया है.

इन वर्णनों में निश्चय ही सूफी कवियों ने अपने इस्लामी ब्रह्म को निरूपित करने के लिए उपनिषदों की हिन्दू प्रणाली को आत्मसात किया है. इसी प्रकार उपनिषदों की ब्रह्म-निरूपण की एक अन्य प्रणाली भी इसमें दीख पड़ती है. जायसी ने यहाँ 'पुराण' शब्द का प्रयोग हिन्दू धर्म-ग्रन्थों के लिए ही किया है. ब्रह्म की यह विरोधात्मक व्याख्या एक और तरह से उपनिषद के अनुरुप ही है. जायसी ने अपने इस निरुपण को पुराण-सम्मत कहा है और तुलसीदास इसे वेद-सम्मत कहते हैं. वास्तव में दोनो ने इसे उपनिषदों से ही ग्रहण किया है. परमात्मा के इन्हीं गुणों के कारण उसका वर्णन करना असम्भव है. उसकी इस अवर्णनीयता का उल्लेख उपनिषदों में मिलता है. उसे मन और वाणी से परे कहकर यही भाव व्यक्त किया गया है. जायसी ने भी लिखा है कि उस कर्ता की करनी का वर्णन करना सम्भव नहीं है. सात स्वर्ग का यदि काग़ज़ किया जाए और जगत् के जितने वृक्षों की टहनियाँ, जितने पक्षियों के पंख, जितने बालू और मिट्टी के कण तथा जितनी मेघ की बूँदे और आकाश के तारे हैं, उन सबकी लेखनी बनाकर सारा संसार लिखने लगे तो भी उस ईश्वर के गुणों का वर्णन लिखा नहीं जा सकता. जायसी की शैली में ब्रह्म का निरूपण इस प्रकार है-'जैसा पुराण में लिखा हुआ है, उस विधि से परमात्मा को पहचानों और उसका ज्ञान प्राप्त करो. वह जीव नहीं है, पर बोलता है. उसके हाथ नहीं है पर सबकुछ करता है. जिव्हा नहीं है पर सबकुछ बोलता है. उसका कोई शरीर नहीं है पर सबको डुलाता और स्वयं डोलता है. कान नहीं है पर सबकुछ देखता है. उसके जैसा कोई नहीं है. उसका कोई स्थान नहीं है, पर उसके बिना कोई स्थान खाली भी नहीं है. वह रुपविहीन निर्मल नामवाला है. समस्त जगत में व्याप्त है. ज्ञान की दृष्टि वालों के लिए वह निकट ही है, पर अज्ञानी के लिए दूर है.

सूफी कवियों ने परमात्मा के लिए उन्हीं नामों का प्रयोग किया है जो हिन्दुओं में प्रचलित है. दाऊद ने परमात्मा के लिए 'सिरजनहार' (सृजनकर्ता) तथा कुतुबन और जायसी ने उसे 'कर्तार' कहकर पुकारा है. यह शब्द उस समय ईश्वर के लिए प्रचलित थी. नानक आदि ने भी इसका प्रयोग किया है.

सृष्टि-निर्माणः हिन्दी सूफी कवियों ने सृष्टि-निर्माण की प्रक्रिया को इस्लामी ढंग से ही व्यक्त किया है. इस्लाम के अनुसार परमात्मा ज्योतिस्वरूप इस्लामी ढंग से ही व्यक्त किया है. इस्लाम के अनुसार परमात्मा ज्योतिस्वरुप है. उसने संसार के रुप में सर्वप्रथम एक ज्योति का निर्माण किया है. इन कवियों ने सृष्टि-रचना के सन्दर्भ में हिन्दू और इस्लामी दर्शन के समन्वय का प्रयत्न किया है. कुतुबन ने लिखा है कि परमात्मा ने सबसे पहले 'नूरे मुहम्मद का निर्माण किया. फिर अपने आपको शिव और शक्ति रुप में दो घटों में प्रकट किया. यहाँ कवि ने शिव और शक्ति का साभिप्राय प्रयोग किया है, जिन्हें हिन्दू दर्शन में ब्रह्म और माया के लिए प्रयुक्त किया जाता है. शिव और शक्ति शब्दों का प्रयोग जायसी ने भी किया है. वे कहते हैं कि मन ही शिव है और मन ही शक्ति है. जायसी ने जगत् के मिथ्यात्व की घोषणा की है कि उस ब्रह्म के अतिरिक्त सब कुछ 'नास्ति' है. वह ब्रह्म ही इस जगत् को बनाता है और समाप्त करता है और चाहता है तो पुनः बना देता है. वे कहते हैं कि सांसारिक जीव मिट्टी के पात्र के समान क्षणजीवी है. यह जीवन तो रह के जल के समान क्षणभंगुर है. जो एक घड़ी में भरता है और दूसरी घड़ी में ढलकर समाप्त हो जाता है.

जीवनमृतकलाः जायसी की रचनाओं के अध्ययन से पता चलता है कि भगवान बुद्ध की भाँति उन्हें जरा और मरण के कारण संसार में असारता का भान होता है. उनके अनुसार नश्वर जीवन की सार्थकता 'प्रेम' में है. उस परम शक्ति का प्रेम प्राप्त करना बड़ा कठिन है. इसके लिए जीवन की सभी कामनाओं पर विजय प्राप्त करना

आवश्यक होता है. भारतीय ऋषियों और सन्तों की जीवनमुक्तावस्था तथा सूफी सन्तों की 'फना' की अवस्था की भाँति हिन्दी के सूफी कवियों ने जीवन में ही मृत्यु को साधने का सन्देश दिया है. इसके बिना प्रेम के मार्ग पर अग्रसर होना कठिन है.

पद्मावत में रत्नसेन अपनी जीवन-मुक्तता संकेत करते हुए कहता है, 'जिसने अपार प्रेम-समुद्र का अवगाहन किया वह हंस की भांति उसे तैरकर पार कर लेता है. मेरे हृदय का प्रेम ही मानों समुद्र है और मेरे नेत्र कौडिया पक्षी के समान है जो उस प्रेम-समुद्र की मोती की बूंदे लेकर ऊपर उड़ते है और उसे आँसुओं के रूप में गिरा देते हैं.

गोरखपंथी योगियों का प्रभावः सूफी प्रेमाख्यानों के नायक प्रायः योगी बनकर अपनी प्रेमिकाओं को प्राप्त करने के लिए निकल पड़ते है. रत्नसेन योगी बनकर निकलता है तो उसके साथ किंगरी, सिर पर जटा, शरीर पर भस्म और रूद्राक्ष की माला है. उसके कानों में कुंडल, हाथ में कमण्डल, पैरों में खड़ाऊ, सिर पर छत्र, एक हाथ में खप्पर तथा शरीर पर लाल रंग का वस्त्र सुशोभित है.

योगसाधना और प्रेममार्गः सूफी प्रेमाख्यानों में 'योग' और 'भोग' शब्द का प्रयोग साथ-साथ किया गया है. यह दिखाया गया है कि प्रत्येक योगी का लक्ष्य भोग है. उनके अनुसार योग यह भोग का साधन है. 'भोग' शब्द यह प्रेममार्ग का प्रतीक है और सूफी -प्रेमसाधना के लक्ष्य का प्रतिनिधि है. भारतीय योग साधना से सूफियों ने अपनी प्रेमसाधना को समन्वित करके भारत में उसे एक नवीन रुप प्रदान किया है. इस प्रवृत्ति का प्रारम्भ 'चन्दायन' और 'मृगावती' से होता है और इसका पूर्ण परिपाक 'पदमावत' में हुआ है. हिन्दी सूफी कवियों को शरीअल, तरीकत, मारिफत और हकीकत या फ़ना और बक़ा आदि के साँचे में ही पूर्णरुप से नहीं समझा जा सकता. अपने प्रेममार्ग के निरूपण में उन्होंने अपनी कुछ मौलिकताओं का प्रदर्षन भी किया है. कंचन नगर पहुँचने पर मृगावती योगी को भोजन लेकर जाने को कहती है. पर योगी को केवल प्रेम ही चाहिए. वह मिलजाने पर उसे किसी भोजन की आवश्यकता नहीं है. यही स्थिति सिद्ध पुरुष के रूप में तपस्या करने वाले 'लोरिक' की भी है. योग मार्ग का साधना प्रेम-साधना का प्रथम सोपान है. योगी बनकर निकलते समय 'सुआ' इस मर्म को खोलकर राजा रत्नसेन के सामने रख देता है कि सिंहासन के पथपर कोई योगी, तपस्वी या सन्यासी ही जा सकता है. सिद्धि प्राप्ति के लिए कहा गया है कि वह इच्छा मात्र से नहीं मिलती बल्कि तप द्वारा अहं को समाप्त करने से ही मानसिक विकार समाप्त हो सकते हैं. कुतुबन ने लिखा है कि शारीरिक धर्म से मुक्ति मिल जाने पर काम, क्रोधादि विकारों से मनुष्य को छुटकारा मिल जाता है. पर शारीरिक धर्म से मुक्ति पाने के लिए अहं को समाप्त करके सिद्ध बनना पड़ता है. इसके लिए गुरु की सहायता आवश्यकता होती है. जो जीव और ब्रह्म के बीच के भेद-भाव को हटाकर एक रूपता का निर्माण करता है.

इस प्रकार देखा जा सकता है कि 'चन्दायन' का 'लोरिक', 'मृगावती' का 'राजकुंवर' तथा 'पदमावत' का 'रत्नसेन' तीनों प्रेम-योगी हैं. और तीनों योगमार्ग पर अग्रसर होकर प्रेम ही प्राप्त करना चाहते हैं. उनकी वास्तविक पीड़ा प्रेम की पीड़ा है और उनके शरीर तथा मन की साधना का उद्देश्य भी प्रेमामृत की प्राप्ति ही है. प्रेमसाधना की सफलता के लिए योग साधना एक साधन के रूप में ग्रहण किया हुआ प्रतीत होता है. इन कवियों ने बड़ी चतुराई से प्रेम को श्रेष्ठ बताते हुए और उसी को प्रेम-साधना का अन्तिम लक्ष्य निरुपित करते हुए योग-साधना को एक सोपान के रुप में ग्रहण करते हुए प्रेम-साधना का पूर्ण परिचय दिया है.

धर्म सम्बन्धी प्रभाव : हिन्दी सूफी काव्य-धारा की पृष्ठभूमि का अवलोकन करने पर पता चलता है कि वह युग भारत में एक धार्मिक साम्प्रदायिक क्रान्ति का युग था. धर्म की धारा ने पुराणों के समय तक त्रिदेव-ब्रह्मा-विष्णु और शिव की मान्यता को जन्म दिया था. वैदिक देवताओं का स्थान त्रिदेवों ने ले लिया था. पुनः विष्णु की उपासना और उनके विभिन्न अवतारों की मान्यताओं को लेकर वैष्णव मतवाद और उपासना -पद्धति आदि के भेद से कई सम्प्रदाय बन गए थे. इस प्रकार शिव की उपासना और शिवतत्व के दार्शनिक चिन्तन से शैवमत और लिंगायत आदि शाखाओं का जन्म हुआ. शिव के साथ ही शक्ति की धारणा भी थी. शक्ति को उपास्य बनाकर स्वतंत्र रीति से शाक्त मत ने भी अस्तित्व ग्रहण किया. मध्य युग में वैष्णव, शैव और शाक्त इन तीनों का ही प्रचार था. इनमें परस्पर संघर्ष भी होते रहे थे. जिसका संकेत हमें मध्ययुगीन साहित्य में मिलता है. सूफियों के ऊपर पड़े दार्शनिक प्रभाव का विवेचन करते हुए यह देखा जा चुका है कि सिद्धों और नाथों की साधना का प्रभाव व्यापक रूप से कवियों पर पड़ा है. धर्म की दृष्टि से भी इनके ऊपर इस्लाम धर्म के साथ ही हिन्दू

धर्म के विविध विधि-विधानों का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा है.

सूफी कवियों ने हिन्दू जीवन में वेद की सर्वोतपरि महत्ता को समझा था. उनके प्रेमख्यानों में वेद पढ़ने, उनके ज्ञान द्वारा पंडित बनने तथा समाज में उनके महत्व का उल्लेख मिलता है. चारों वेदों का नाम के साथ उल्लेख दाऊद के 'चन्दायन' से ही प्रारंभ होता है. मैना का सन्देश-वाहक ब्राह्मण वेदों का ज्ञाता है और पुराण की पोथियों को समझने वाला विद्वान है. कुतुबन ने 'मृगावती' में राजकुंवर के अध्ययन-काल की दस वर्ष की आयु में ही उसे पुराण की पोथियों को बांचने में समर्थ लिखा है. 'मन्दिर निर्माण' खण्ड में कवि यह चर्चा करते हुए कि मन्दिर में बहुत से चित्र बनाए गए थे, उसमें पंडित सहदेव का चित्र बना है जो चारों वेदों को हाथ में लिए हुए हैं. पाँचों पाण्डवों में सहदेव पण्डित वेदों के प्रकाण्ड विद्वान माने जाते हैं.

जायसी ने चार वेदों की चर्चा की है लेकिन उनका नाम नहीं गिनाया है. हीरामन सुआ रत्नसेन से कहता है कि पढ़-गुनकर और वेदमत के भेद को समझकर जो पूछी हुई बात का उत्तर देता है, वह सहदेव जैसा पंडित कहा जाता है. पद्मावती भी हीरामन के साथ रहकर शास्त्र और वेद का अध्ययन करती थी.

पुराण अपनी रोचक कथाओं के कारण हिन्दू धर्म-ग्रन्थों में सर्वाधिक लोकप्रिय है. पुराणों का महत्व भी वेदों की भाँति हिन्दुओं में पर्याप्त अधिक माना जाता है. प्रेमाख्यानों में पौराणिक पात्रों एवं कथाओं के संकेत, उदाहरण और अलंकार आदि के रूप में भरे पड़े हैं. अनेक प्रसिद्ध पौराणिक कथाएँ इनमें स्थान-स्थान पर पिरोई हुई है. अगस्त का समुद्र सोखना, गन्धवौं का सुन्दरी कन्याओं पर मुग्ध होना, चन्द्रमा और राहु की शत्रुता, समुद्र-मन्थन, अर्जुन द्वारा कौरव दल का संहार आदि पौराणिक कथाओं का उल्लेख स्थान-स्थान पर आया है. पुराण हिन्दुओं का अत्यंत प्रचलित प्राचीन धर्म-कथा सम्बन्धी ग्रन्थ है. इनकी कथाओं को अपने काव्य के परिवेश में समेटकर इन कवियों ने अपने को हिन्दू जीवन के अत्यन्त निकट और समरस होता हुआ दिखाने का प्रयत्न किया है. प्रचलित तथा अप्रचलित असंख्य पौराणिक कथाओं के साथ ही इन कवियों ने रामायण और महाभारत की भी बहुत सी कथाओं को अपने काव्य में वर्णित किया है. इससे यह प्रतीत होता है कि इन कवियों को हिन्दुओं के धार्मिक पुराणों तथा काव्य-ग्रनथों का अच्छा ज्ञान था.

निष्कर्ष : उपर्युक्त विवेचन के आध ाार पर हम इस निश्कर्श पर पहुचते है कि सूफी कवियों द्वारा हिन्दू दर्शन को और धर्म को अपने प्रेमाख्यानों में पूर्णतः समेटने का प्रयास हुआ है. जायसी के 'पद्मावत' में तो इसका ऐसा व्यापक और व्यवस्थित वर्णन मिलता है कि उसे हिन्दू जीवन का विश्वकोष तक कहा गया है. कवियों ने हिन्दू लोकजीवन को अपने काव्य में समाविष्ट करके उन्हें लोकाभिमुख और लोकप्रिय बनाया है.

संदर्भ-ग्रन्थ सूचीः 1—माता प्रसाद गुप्त-चन्दायन, 2-परमेश्वरीलाल गुप्त-चन्दायन, 3—परशुराम चतुर्वेदी-हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यान, 4— श्याम मनोहर पाण्डेय-सूफी काव्य विमर्श, 5— जायसी-जायसी ग्रन्थावली, 6-शिवसहाय पाठक-चित्ररेखा, 7-नागरी प्रचारिणी पत्रिका-भाग 14, 8- मलिक मुहम्मद जायसी-सैयद कल्वे मुस्तफा

क्या आप लिखते हैं ?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था
4.विमोचन की व्यवस्था
5. ऑन लाईन/ऑफ लाइन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः

प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई—मेलः sahityaseva@rediffmail.com

लव गुरू की जनचेतना

-डा० अरूण कुमार 'आनन्द'
सीता रोड, चन्दौसी, संभल उ०प्र०

'हाँ'..आज उसकी याद इतनी अधिक आ रही है कि उसकी सारी गतिविधियां चित्रपट की तरह से ऐसे आ रही थी जैसे वह सामने खड़ी है और अपनी मनमोहक हँसी से मुझे मुग्ध करती रही है. मैं अवाक उसे निहरते रहा हूँ. अनायास ही 'बाह-बाह' कह उठता हूँ. अग वह की किसी तनाव या क्रोध की स्थिति में नहीं हँस पाती तो ऐसा लगता कि कहीं कोई चीज खो गयी हैं. आज जब उसकी याद आ ही रही है तो उसका नाम भी याद कर लेना अचित होगा. उसका नाम 'उर्मिला' था. मैं उसे 'उर्मि' कहता था. यह भी कहता कि उर्मि तरंग है. तरंग, गतिशीलता है, गतिशीलता ही क्रिया है. यह क्रिया सृजन का आधार है. मार्ग या मेरी बह तरंग है जो जहाँ भी मिलती है मेरी रचना धर्मिता बढ़ा देती है वह मेरी रचना बन जाती है. मैं उसका कागज.

तालाब व सरोवर का जल इतना शांत रहता है कि कोई अपना मुँह देख ले. किन्तु वही जल एक छोटे से कंकड़ की मार को भी नहीं सहपाता. लगता है कि तालाब लम्बी-लम्बी सांसे ले रहा है. अशांति का अनुभव कर रहा है. ऐसी ही हलचल, मेरे जीवन में तब होती थी जब वह उन्मुक्त हँसी उर्मि हँसती थी. उसकी हँसी मेरे अस्तित्व को हिला के रख देती थी. मैं सोचता रहता कि उससे मेरा रिश्ता क्या है. मैं अध्यापक वह विद्यार्थी मैं शादी-सुदा, दो लड़को का पिता. आखिरकार मेरे मन में उर्मि के लिए 'कुछ-न-कुछ' होता है. इसे पहली बार सिनेमा के पर्दे पर देखा कि इस फिल्म में नायक व नायिका दोनों को कुछ न कुछ होता रहता है. फिर दोनों आपस में ऐसे मिलते है कि विवाह कर लेते है. मेरे मन ने कहा कि अगर 'कुछ-कुछ होता है, तो ऐसे कुछ न कुछ से दूर रहा. नही ंतो सुशीला, जो नाम की सुशीला है, अवसर पाते की शेर की तरह इतनी फुर्तिला ही जाती है कि प्राण संकट में पड़ जाता है, बड़ी ही मुश्किल से उससे पीछा छुटता है, लेकिन कुछ कुछ होता है, एक बीमारी की तरह से मेरे अस्तित्व से चिपक गया.

'उर्मि' अनायास ही मेरे न बुटीक आती गयी. मैं पहले सोचता था कि लड़की तो केले के छिलके की तरह होती है. छिलका फेंकने के लिए नहीं होता है. अगर केलो के साथ-साथ छिलका भी खाने लगे तो उसका अभिशाप झेलना ही पड़ेगा. ऐसी स्थिति में... उर्मि आयी थी मेरे पास और बड़ी ही मासुमियत से वीली कि "सर, मैं तो इंगलिस मिडियम की छाज रही हूँ. हिन्दी कम ही समझती पाती हूँ. अगर आप हिन्दी का ट्यूसन दे देती वह भी सुधर जायेगी." मैनें उसकी बात सुनकर, योचने में अपना समय बर्बाद न करके तुरन्त कही-"तुम चिन्ता न करो, मैं हूँ ना..यह होना ही जब 'कुछ-कुछ होने' में बदलने लगता है, तो मेरी बेचैनी बढ़ती जाती है. आश्चर्य यह कि- 'उर्मि, की हिन्दी पढ़ाते-पढ़ाते, मैं स्वयं ही मैं पढ़ने लगता. इतना भाव विहवल हो जाता कि उसके हाथों को पकड़ लेता. उर्मि कुछ नहीं बोलती. बस, मुस्काती रहती. मेरी सामने कुछ नहीं होता, बस कुछ न कुछ होने लगता. सुशीला के साथ जब मेरा विवाह हुआ तो उस समय मेरी आयु करीब 16 वर्ष की थी. आज पीछे मुड़कर देखता हूँ तो एक विराट अंधेरे के सिवाय कुछ भी दिखायी नहीं पड़त. अब जब कि सब कुछ खत्म हो चुका है लगभग 50 वर्ष के निकट पहुँच रहा हूँ तो तो एक साफ चित्र मेरे सामने उतर आता है. मैं टुकड़ो-टुकड़ो में अपने विगत की तश्वीर देखता हूँ तो मुँह से एक आह निकल जाती है. पुरूष या स्त्री का यौवन, उसके जीवन की एक शाश्वत्व सत्य है. जीवन की सुखद या पुखद अनुभूतियों का अक्षय भण्डार होता है. जैसे-जैसे व्यक्ति की आयु बढ़ती जाती है वैसे ही व्यक्ति इसे सहेज कर एक धरती के रूप में सहेज कर रखता है. उर्मि का निगाह में ट्यूशन के पढाने वाले उसके 'सर जी' की कोई तुलना नहीं है, मैने एक दिन महसूस किया कि 'कुछ-कुछ होता है' कि भाषा हमसे अधिक 'उर्मि' बोलने लगी है. एक दिन ऐसा हुआ कि 'हमारी और उसकी फोटो' एक दैनिक अखबार के प्रथम पृष्ठ पर छप गयी. लिखा था-'नये लव गुरू का नया निशाना' इसे देखते ही हमारे दोनों घरों में कुहराम मच गया. लव गुरू की ढाल की तरह 'उर्मि' घूमती रहती कि कोई अनहोनी न घट जाये. लवगुरू की कोई न कोई करानी रोज ही छपती. आने वाली होली में 'लव गुरू' एक इतिहास पुरूष हो गये. बाजार 'लवगुरू' की टोपी, लंगोटी, सोटी (बुढ्डो का सहारा), पिचकारी, यहाँ तक नये पैंट-शूर्ट पर भी 'लवगुरू' की फोटो छप गयी. लवगुरू और उर्मि जी जान से इस बात को निजी मामला मानकर एक साक्षात्कार में लोगों से निवेदन किया कि- 'लोग मेरे व्यक्तिगत

जीवन में झाँकने की कोशिश न करें. मैनें कोई गलत कार्य नहीं किया.' किन्तु मिडिया वाले कहाँ मानने वाले है. एक पेपर वाले ने तो 'लवेरिया' कलम से कुछ न कुछ रोचक गद्यशाघ में मलेरिया, के समकक्ष 'लवेरिया' को रख कर लव गुरू के विगत इतिहास की कहानी शुरू की तो दूसरे अखबार ने 'प्रेमी' है कितने सच्चे कालम अनेक तरह की प्रेम गाथायें प्रकाशित होने लगी. दुकानदार खुश थे कि 'लव गुरू' की याद में निकले सामानों के कारण ही बिक्री अधिक हुई.

'गुलाव' सदा से ही काँटों मे ही अधिक खिलता है. खिलना उसकी प्रकृति है. प्रकृति का विकृत कला और साहित्यको अधिक बेकार करता है, किन्तु यह तय है कि प्रकृति न हो तो पुरूष बेकार की वस्तु बनके रह जाता है. मैने प्रेम के आत्मीय क्षणों में जब 'उर्मि' से कहा कि-'उर्मि, तुम गुलाव की तरह सुंदर हो.' 'तुम्हारे यौवन की जय हो.' अनायास ही हमारे होठों पर एक मुस्कान उभर आयी. उर्मि ने विवके सम्मत तर्क दिया-सर, गुलाव तो सुगंधहीन होता है. सुगंधहीन सौंदर्य किस-किस काम का. 'मैंने समझाने की कोशिश की-'देखों उर्मि. यह शब्द आत्म से बँध है. यही एक ऐसा रस है जो सौदर्य बोध की स्थिति में संयोग या वियोग, किसी लेखक व पाठक को एक सहजीकरण की स्थिति में श्रृंगार अर्थात मिलन पर मैं ज्यादा जोर देता हूँ. प्रकृति और पुरूष का मिलन हो या आत्मा से परमात्मा का मिलन हो, सभी एक चिर परिचित सौंदर्य बोध को जागृत करता हैं. उर्मि ने प्रतिवाद किया-'यौवन की जय हो'...के बाद की स्थिति को समकालीन साहित्य के नाम पर प्रकाशित पुस्तकों के माध्यम से किसी तरह से लोग बच-बचाकर गंगा स्नान करके भक्त गन्तव्य में चल देते हैं.

हर प्रेमी अपनी एक भाषा गढ़ते है. यह होती है उनके प्रेम की भाषा. इसी के माध्यम से मन में स्वयं ही एक अनुराग जाग जाता है. उसे लोग ईश्वरीय रूप कहते हैं. इस माला को मैंने योगेश्वर कृष्ण के माध्यम से उठाया. मैंने कहाँ-'कृष्ण इस सृष्टि के सबसे सफल प्रेमी हैं. कृष्ण तब तक सफल या पूर्ण नहीं है जब तक राधा का मिलन कृष्ण से नहीं हो जाता.' उर्मि सलडज नेत्रों से मुझे निहारती हुई बोली-'सर, आप क्या कह रहे हैं?'

-'वही, जो कहना चाहिए.. राधा प्रेम का वह चरमोत्कर्ष तत्व है जहाँ पहुँचकर आत्मा स्वयं, परमात्मा बन जाती है. मांसल शरीर का वहाँ कोई महत्व नहीं रह जाता. किसी प्रेमी के लिए मात्र शरीर प्रेम नहीं है, कृष्ण, राधा के लिए यौवन सत्य है सौदर्य सत्य है, प्रेम सत्य है. जगत सत्य है. इस सत्य का साक्षात्कार, सत्य का सत्य है जो आज तुम हो.'

'उर्मि, आज तुम कृष्ण के रूप में मेरे सामने हो.. यह भी लौकिक सत्य है.

'नहीं सर.., अगर प्रेम, सत्य नहीं है, तो फिर प्रेम भी सत्य नहीं हो सकता. नर-नारी का लौकिक, आकर्षण ही तो प्रेम सत्य के रूप सार्थक होता है. किन्तु अब तो डर लगने लगा है. ..?' उर्मि ने कहा तो अंदर से मैं विचलित होने लगा मैं का अंह बोध जागृत हो उठा. वह कुछ कहना चाहते थे. किन्तु उर्मि ने स्वयं की पूरी आंतविक शक्ति को बटोर कर बोली..।

-'राधा, कभी भी पूर्ण रूपेण कृष्ण को पान सकी. मैं यह नहीं चाहती कि राधा के रूप में मैं अपने कृष्ण को प्राप्त करने के लिए जन्म भर तड़पती रहूँ.'.

मेरा अहंबोध फिर जागृत हो उठा. मैंने उसे समझाते हुए कहा कि-'आज के बाद तुम केवल 'उर्मि' नहीं, 'उर्मि कृष्ण' बन चुकी हो.. कृष्ण की उर्मि, उर्मि का कृष्ण नहीं. विश्वास जीवन की आशा है. हमारे-तुम्हारे बीच कभी भी कोई उर्मि या कृष्ण आधा नहीं रहेगा. जब भी हम मिलेगें...पूर्ण मिलेगे.' यह कहते हुए बड़े ही सहज भाव से उर्मि का हाथ अपने हाथों में लेकर उसके माथे पर उभर आयी रेखाओं को पढ़ने की कोशिश करने लगा, मुझे लगा कि उर्मि का चेहरा कई तरह के प्रश्नों से भर गया है. कई प्रश्न हवा में लहरा रहे है. मैं डर गया. उर्मि बोली...

'जिस यौवन को आप कृष्ण सत्य मानते हैं, उसमें स्थायित्व कहाँ.. यह कैसा विश्वास है कि जो एक से टूट कर दूसरे से जुड़ जाता है. कोई बिखर जाता है तो कोई अलग जाता है.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के साहित्यकारों ने प्रकट की संवेदना

सुप्रसिद्ध साहित्यकार बुद्धिराजा को दी श्रद्धांजलि

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की संरक्षिका सुप्रसिद्ध लेखिका व आलोचक डा.राज बुद्धिराजा तथा उनकी विदुशी पुत्री सुनीता बुद्धिराजा का १६ अप्रैल को निधन हो गया. साहित्यकार माँ और पुत्री का एक ही दिन इस जगत् से चले जाना, हिंदी साहित्य जगत् पर बहुत बड़ा आघात है.

संस्थान के सचिव डा. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, प्रयागराज ने कहा कि डा. राज बुद्धिराजा विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान से २००५ से २०१७ तक सक्रिय रूप से जुड़ी रही. वे संस्थान की संरक्षक थीं. संस्थान को विस्तार देने में उनका अतुलनीय योगदान रहा. विभिन्न प्रकार से वे संस्थान की सहायता करती रहीं. हिंदी के साथ जापानी भाषा पर भी उनका अधिकार था।

संस्थान के अध्यक्ष प्राचार्य डा. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख, पुणे ने कहा कि, १६ मार्च १९३७ को लाहौर में जन्मी राज बुद्धिराजा बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी थीं. साहित्य की लगभग सभी विधाओं में उन्होंने लेखन किया. भारत-जापान सांस्कृतिक परिषद् की वे अध्यक्ष थीं. केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के तत्वावधान में ३ नवंबर से १० नवंबर २००० की अवधि में शिरडी (महाराष्ट्र) में हुए हिंदी तर भाषी हिंदी नवलेखक शिविर में मार्गदर्शक साहित्यकार के रूप मे वे उपस्थित थीं। उस दौरान उन्होंने श्री क्षेत्र नेवासा, देवगढ़ तथा शनि शिंगणापुर की भी यात्रा की थीं।

नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली के महामंत्री डा. हरिसिंह पाल ने अपने मंतव्य में कहा कि भारत और जापान के मध्य एक सांस्कृतिक सेतु के रूप में डह. राज बुद्धिराजा ने अहम भूमिका निभायी हैं। उनका जगत् से चले जाना अत्यंत दुखद है। माता-पुत्री का एक ही दिन चले जाना अत्यंत पीडाध्दायक है।

राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना के महासचिव डह. प्रभु चौधरी जी ने कहा कि कोरोना महामारी के प्रकोप से हम सभी विचित्र एवं दुखद स्थिति से गुजर रहे हैं। आज सुबह ही माँ पुत्री के निधन की वार्ता से अवगत होने से मन अत्यंत खिन्न व उदास हुआ।

डा. सुनीता यादव, औरंगाबाद ने कहा कि डा.राज बुद्धिराजा व संगीत अध्येता सुनीता बुद्धिराजा के निधन से साहित्य और संगीत की कड़ी टूट गई. डा. रश्मि चौबे, गाजियाबाद, अपने खराब स्वास्थ्य के चलते उन्होंने भावभीनी श्रद्धांजलि व संवेदना प्रकट की।.

डा. मुक्ता कान्हा कौशिक, हिंदी सांसद, छत्तीसगढ़ ने शोकसभा का संचालन करते हुए कहा कि संस्थान की संरक्षक डा. राज बुद्धिराजा और उनकी पुत्री का निधन साहित्य व संस्थान की क्षति है, जिसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता. जीवन एक संयोग मात्र है, सुख और दुख क्रमवार आते हैं. अतः ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति और मोक्ष प्रदान करें.

अंत मे जूम पटल पर जुड़े सभी प्रतिभागियों ने दो मिनट का मौन धारण कर दिवंगतों के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस शोक सभा में डा. सीमा वर्मा-लखनऊ, केरल प्रदेश की संस्थान प्रतिनिधि डा. प्रिया ए., मिर्जापुर से हिंदी सांसद डा.निगम प्रकाश कश्यप, डा. पूणिर्मा उमेश झंडे उपस्थित रहें.

रस्म

छुट्टियों के बाद स्कूल में मेरा पहला दिन था. नीना को सामने से आता देख मुझे अचम्भा सा हुआ. वह स्कूल की पी.टी. अध्यापिका है. पूरा दिन चुस्त-दुरुस्त, मुस्काती, दहाड़ती, हल्के-हल्के कदमों से दौड़ती वह कभी भी स्कूल में देखी जा सकती है. आज वह, वो नीना नहीं कुछ बदली सी थी. उसने अपने सिर के सारे बाल मुंडवा दिये थे. काली शर्ट व पैंट पहने कुछ उदास सी लग रही थी. कुछ ही समय में पता चला कि इन छुट्टियों में उसके पापा की मृत्यु हो गई थी. सुनकर बुरा लगा. शाम को मैं करीब चार बजे उसके घर गई. उसने मुझे बैठक में बिठाया. पानी लाई व मेरे पास बैठ गई. पूछने पर पता चला कि उसके पिता की मृत्यु हृदय गति रूकने के कारण हुई थी. रात का समय था, वह उन्हें अस्पताल ले गई जहाँ डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. घर आकर उसने अपने रिश्तेदारों को पिता जी मृत्यु की सूचना दे दी. सुबह पूरा जमघट लग गया. सवाल कि संस्कार पर कौन बैठेगा? चाचा के 3 बेटे थे. तीनों खिसक लिये. समय का अभाव था. नीना की दो बड़ी बहनें शादीशुदा थी, उनके बच्चे व पति भी व्यस्त थे. वह 10 दिन बैठ नहीं सकते थे. लाश को उठाने से पहले यह कानाफुसी नीना तक पहुँच गई. वह माँ के पास बैठी थी. उसने आँसू पोंछे व पिछवाड़े वाले ताऊजी से कहा जो रात से उनके साथ थे, ''ताऊजी, मैं करूँगी पिताजी का अन्तिम संस्कार, मैं बैठूँगी सारी पूजा पर.'' सबके दाँतों तले अंगुली आ गई. पर नीना ने किसी की परवाह न की. कंधे पर सफेद कपड़ा रख कर, सबसे पहले अपने पापा की लाश को कंधा दिया व शमशान तक पूरी विधिपूर्वक सब कार्य किया. बताते-बताते उसकी आँखें कई बार नम हुई. बोली, ''मैडम, मेरे पापा उकसर कहते थे मेरी दो बेटियाँ, एक बेटा है. मुझे क्या पता था कि आज...'' मैंने उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, ''नीना, मुझे तुझ पर गर्व है.''

कुंठा

`रीमा आफिस में नई-नई आई है. देखने में सुन्दर, सुशील और बहुत ही सुलझी हुई. अपने काम से काम और फिर होठों पर सदा मुस्कराहट. यह सब देखते हुए मुझे कुछ तसल्ली सी न होती. वह पूरे स्टाफ में किसी के साथ भी घुल-मिल न पाई. बस सबके साथ औपचारिकता निभाती दिखाई देती. एक दिन जोरों की बारिश हो रही थी कि आज आफिस में काम भी कुछ कम था. मेरे साथ उसका रिश्ता माँ-बेटी का सा है. मैंने कहा, ''रीमा चाय पीते हैं.'' उसने स्वीकारात्मक 'हाँ' भर दी. हम दोनों बैठे थे कि चाय आ गई व मैंने पूछा, ''रीमा शादी नहीं हुई अभी.'' ''नहीं.'' उसके बाद वह इधर-उधर ऐसे देखने लगी, जैसे कि कुछ गलत कह दिया हो मैंने. ''फिर कब कर रही है, मुझे मिठाई कब खिलाएगी.'' ''कभी नहीं.'' कह कर वह जोर-जोर से रोने लगी. मुझे लगा, मुझसे कोई बड़ी भूल हो गई है. मैंने उठकर उसे गले से लगाया. वह जी भर कर रोई व ''सॉरी'' कहकर बैठ गई. उसकी यह दशा देख मैं अन्दर तक हिल गई थी. कुछ सांत्वना भरे शब्द कहकर उसके कंधे पर हाथ रखकर कारण पूछा. उसने बताया वह मात्र 12 बरस की थी जब उसका ब्याह हुआ. वह ब्याह के मायने भी न समझती थी, ऊपर से ससुराल वालों की असीमित उम्मीदें, जिन पर वह खड़ी न उतर पाई। उसके साथ सबका व्यवहार बद से बदत्तर हो गया और आखिर मात्र १३ साल ३ महीने की उम्र में उसे मार-पीटकर घर से निकाल दिया। वह पीहर आ गई। यहाँ उसके माता-पिता ने उससे वापस जाने को कहा पर वह न मानी। फिर उसने अपनी पढ़ाई जारी की और बी.कॉम. फिर एम.कॉम. किया। उसने बताया, उस पर किये जुल्म उसे आज भी सोने नहीं देते। वह फिर से रो पड़ी। इस बीच मैंने पूछा कि उसके पति ने दूसरी षादी कर ली। उसने बताया उसके २ बच्चे भी हैं। पर वह षादी नहीं करेगी क्योंकि वो जानना चाहती है उसमें क्या कमी थी। उन लोगों ने ऐसा क्यों किया? मैंने उसे बिठाया, चुप कराया व समझाया, ''देखो रीमा, कल कभी लौटता नहीं, और हर दिन एक सा होता नहीं। तब तुम मात्र १२-१३ वर्श की अबोध बालिका थी, अब इतनी सुन्दर, सलोनी, प्यारी सी लड़की हो। अगर किसी ने तुम्हारे बड़े होने का इन्तजार नहीं किया, तो तुम क्यों इस जिन्दगी को बरबाद कर रही हो और हाँ, तुमने कुछ नहीं खोया, उन्होंने एक अच्छी बहु खोई।'' उसके चेहरे की रंगत बदल गई। मुझे खुषी है इस बात की, कि उसकी कुंठा को निकाल पाई मैं और पता चला कि उसने अब इरादा बदला है। नए जीवन की ओर पग बढ़ाया है।

-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि.प्र.

देश के महान फिल्म कलाकार-युसुफ खान उर्फ 'दिलीप कुमार'

-ब्रजभूषण चतुर्वेदी (बीबीसी)

इंसान कितना जियेगा पता नहीं लेकिन उसके कलापूर्ण इतिहास ने संसार के दर्शकों के बीच बहुत गहरा संबंध स्थापित कर दिया है. याने दिलीप कुमार ने कई दशकों अपनी कला से सर्वोच्चता पाई. वे जब फिल्म संसार में आये तो उनका नाम युसुफ खान था लेकिन उस समय की महान अभिनेत्री देविकारानी ने उन्हें 'दिलीप कुमार' नाम देकर उन्हें अमर कर दिया. एक समय ऐसा था जब दिलीप साहब की फिल्मों के प्रदर्शनी का इंतजार किया जाता था. दिलीप कुमार, राजकुमार, राजेन्द्र कुमार, राजकुमार, संजीव कुमार, बलराम सहानी, अशोक कुमार ऐसे नाम थे जिनसे आज दर्शक उनकी फिल्मों को देखने की उत्सुकता रखते थे. बस 1940 के बाद से 2000 तक ये सभी नाम फिल्म संसार को अमरता प्रदान कर गये. दिलीप साहब 98 के पार हो गए हैं एवं आशा है. भले ही उनका शरीर काम नहीं कर रहा है व शायरा जी उनकी भरपूर सेवा कर रही हो. भारत के फिल्म इतिहास में कुछ ही नाम ऐसे हैं जो शतक पार कर सके हो.

आईये दिलीप साहब के बारे में कुछ विचारें, लिखें-दिलीप कुमार एक अभिनेता, निर्माता, निर्देशक लेखक, गायक ही नहीं एक बड़ा संवदेनशील इंसान व कलाकारों का शहंशाह है. 93 वर्ष की उम्र में बीमारियों से धीरे इस महान कलाकार ने अपनी याददाश्त खो दी है. पत्नी शायरा बानू एवं उनका परिवार उनकी हर संभव सहायता कर रहा है. दिलीप कुमार ने शानदार जीवन जिया है व वे अभिनय सम्राट के रूप में पहचाने जाते हैं. उनकी लगभग

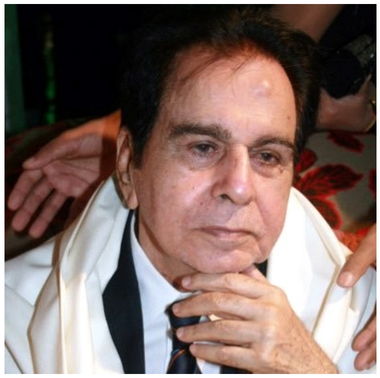

दो दर्जन से ज्यादा फिल्मों ने जो कीर्तिमान स्थापित किये उतने किसी कलाकार के नहीं. अनेकों रजत, स्वर्ण जयंती फिल्मों का यह शानदार नायक पूरे विश्व में हिन्दी फिल्मों के प्रेमियों के लिये एक यादगार कलाकार है. उनकी फिल्में हृदय को छू जाती है. क्या आप नया दौर के तांगे वाला, एवं मुगले आजम के सलीम तथा गंगा जमुना के शानदार अभिनय को कभी भूल सकेंगे. अभिनय एक महान कला है व यह जीवन का एक अंग भी है स्टेज याने रंगमंच का सेल्यूलाईट के छोटे बड़े पर्दे पर जब कला का प्रदर्शन कलाकार करता है तो यह कला स्वाभाविक रूप से और निखर जाती है इसी आधार पर एक महान कलाकार ने विगत् 6 दशकों से अपनी अभिनय कला को दर्शकों के बीच प्रस्तुत किया वे इस महान कलाकार के दीवाने हो गये. इस महान कलाकार व कलाकार का नाम है 'दिलीप कुमार' मोहम्मद युसुफ खान. 11 दिसम्बर 1920 को ओएसा शिवाजी बाजार पेशावर में 12 बच्चों के परिवार में जन्म हुआ जिसे जब खेबर पकनआ पाकिस्तान भी कहते है. उनके पिता हाजी गुलाम सरवर भू-मालिक व फल फ्रूट के व्यापारी थे वे पेशावर (पाक) एवं देवलाली (महाराष्ट्र) में धंधा करते थे. नासिक के पास देवलाजी में प्रतिष्ठित बरनेस स्कूल में उन्होंने विद्या ग्रहण की 1940 में उनका बड़ा परिवार बम्बई में आ गया. दिलीप कुमार पुणे चले गए व ड्रायफ्रूट व केन्टिन का व्यापार करने लगे उस समय की बड़ी अभिनेत्री देविका रानी ने दिलीपकुमार में अभिनय की अपार संभावना देखी व उन्होंने जो उस समय बॉम्बे टॉकीज की मालकिन भी थी. दिलीप कुमार को लेकर ज्वार भाट-1944 में अभिनय करवाया. युसुफ खान की प्रतिभा व अभिनय को देखकर उस समय के महान साहित्यकार भगवतीचरण वर्मा ने उन्हें युसुफ खान से दिलीप कुमार पर्दे का नाम दे दिया. जिन्हें हम आज ट्रेजेडी किंग भी कहते हैं। दिलीप साहब को हिन्दी के अलावा अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी को एवं पश्तौनी भाषा भी आती थी. जब वे सफलता से फिल्म संसार में पैर जमाने लगे.

दिलीप कुमार की गाड़ी अभिनय व लोकप्रियता में चल पड़ी. रोमांटिक फिल्म अंदाज-1949, जान-1952, देवदास, आजाद-1955, मुग्ले आजम-1960 एवं गंगा जमुना-1961 में उन्होंने अभिनय किया. उन्होंने अपनी शर्तो पर 1981 में क्रांति (मनोज कुमार), शक्ति-1982, कर्मा-1986, सौदागर-1991 एवं उनकी चरित्र अभिनेता के रूप में आखिरी फिल्म फिजा-1998, तक वे अभिनय में छाये रहे. एक के बाद एक फिल्में देने लगे. ज्वार भाटा-1944, जुगनु-1947, शहीद-1948, अंदाज-1949 में वे राजकपूर व नरगिस के साथ भी आ गये. दिलीप साहब ने

जोगन, दीदार, दाग, देवदास, यहूदी, मधुमति, अमर, फुटपाथ, नया दौर, मुसाफिर, तराना, फागुन व फिर मुग्ले आजम में सलीम की भूमिका ने उन्हें बॉक्स ऑफिस पर खड़ा कर दिया. सबको यह आश्चर्य हुआ कि 2008 तक मुग्ले आजम दूसरी फिल्म भी जिसने सबसे ज्यादा धनवर्षा सिनेमाओं की खिड़की पर थी.

वे मनोज कुमार, सुभाष घई, हेमा मालिनी, अनिल कपूर, शत्रुघ्न सिन्हां, संजय दत्त, संजीव कुमार, शम्मी कपूर व अमिताभ बच्चन के साथ भी काम किया. इन फिल्मों के साथ ही अभिनेत्री सायरा बानू उसके जीवन में आ गई. लेकिन वे फिल्मों से जुड़ाव रखने में कायम रहे. उनकी सफलताओं से उन्हें कई अवार्ड व सम्मान भी मिले. वे सात बार फिल्म फेयर एवं लाईफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड भी प्राप्त कर चुक थे. 1991 में पदम भूषण एवं 1994 में दादा साहेब फालके अवार्ड भी प्रदान किया. 2011 में उन्हें फालके रत्न अवार्ड तथा राज्यसभा के सदस्य भी मनोनीत किये गये.

मोहम्मद रफी, मुकेश, तलत महमूद, किशोर कुमार ने उनके लिखे गीत गाये. उन्हें पाक का सर्वोच्च सम्मान निशाने ए इम्तिजाम भी मिला.

कुछ अनूठी बातें- दिलीप कुमार बॉम्बे टॉकीज में लेखक की नौकरी मांगने गये थे लेकिन अभिनेत्री देविका रानी ने उन्हें एक हजार रूपये प्रतिमाह पर नायक बना दिया.

-कामिनी कौशल व मधुबाला जैसी सुपर स्टार से प्रेम प्रसंग सब जानते थे लेकिन वे अपने भाई बहन, भतीजे, भतीजियों से बहुत प्यार करते थे. उन्होंने लोकप्रिय व सुपर हिट गंगा जमुना, मुसाफिर में लता मंगेशकर के साथ लागी नाही छूटे समा चाहे जिया जाये में गाया भी

नारी का सम्मान ईश्वर की सृष्टि का सम्मान है: बाजपेयी

नारी के बिना सृष्टि संभव नहीं है इसलिए नारी का सम्मान करना ईश्वर की सृष्टि का सम्मान करना है. यह बात राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा नवरात्रि पर्व पर राष्ट्रीय मातृशक्ति सम्मान प्रदान किए जाने संदर्भ आयोजित आभासी कार्यक्रम में श्री हरेराम बाजपेई ने बतौर मुख्य अतिथि कही. उन्होंने कहा की मां को प्राप्त करने के लिए ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ना पड़ता है वह मात्र रूप में शरीर में व्याप्त होती है. मुंबई की सुवर्णा जाधव ने कहा कि मराठी में मां को आई कहते हैं जिसका अर्थ ईश्वर होता है उन्होंने नारी शक्ति पर अपने विचार व्यक्त किए. पुणे से डॉ० शहाबुद्दीन शेख ने कहा कि भारतीय नारी का सकारात्मक सोच ही उसकी शक्ति होती है भारत की संस्कृति में नारी को हमेशा पूज्य माना गया है. उज्जैन से डॉ० शैलेंद्र शर्मा ने कहा कि विश्व में भारत ही ऐसा देश है जहां नारी की पूजा होती है वह लोकधात्री होती है.

आयोजन में डा. सुनीता मंडल, संस्था के महासचिव प्रभु चौधरी, डॉ० चेतना उपाध्याय, श्रीमती आर्या वर्ती सरोजा, डा. रजिया शेख, डा. रश्मि चौबे तथा डा० शिवा लोहारिया को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर संस्था के श्री बी. के. शर्मा, डा. प्रतिमा येरेकर, डा० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, डा. शैल चंद्रा, श्रीमती दिव्या पांडे, श्री सतीश शर्मा रोहणी डावरे, मंजू वाला श्रीवास्तव, लता जोशी, पूर्णिमा कौशिक, ममता झा, अनुसुइया अग्रवाल आदि ने भी सहभागिता की. कार्यक्रम का संचालन डा० मुक्ता कौशिक रायपुर ने किया.

'रामकाव्य की परंपरा और रामराज्य : वैश्विक परिप्रेक्ष्य में' अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

रामराज्य केवल राजनीतिक आदर्श नहीं, संपूर्ण जीवन दर्शन है : प्रो० शर्मा

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया. यह संगोष्ठी रामकाव्य की परंपरा और रामराज्य : वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पर केंद्रित थी. संगोष्ठी के मुख्य अतिथि वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार एवं मीडिया विशेषज्ञ श्री सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक, ओस्लो नार्वे थे. प्रमुख वक्ता समालोचक एवं विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कला संकाय के अध्यक्ष प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार शर्मा थे. विशिष्ट अतिथि विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के अध्यक्ष एवं प्राचार्य डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख -पुणे, वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरेराम वाजपेयी-इंदौर, संपादक-विश्व स्नेह समाज डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी -प्रयागराज, श्रीमती सुवर्णा जाधव -मुंबई, श्री ओमप्रकाश त्रिपाठी-सोनभद्र एवं शिक्षक संचेतना के महासचिव डॉ० प्रभु चौधरी थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता, राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना की कार्यकारी अध्यक्ष डॉ० शैल चंद्रा, धमतरी, छत्तीसगढ़ ने की.

मुख्य अतिथि श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल ने उदबोधन में कहा कि राम की कथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आज भी सकारात्मक दिशा देती है. पर्यावरण प्रेम से जुड़े अनेक संदर्भ राम काव्य में मौजूद हैं.

प्रमुख वक्ता डॉ० शैलेंद्र कुमार शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राम का चरित्र अपार है. स्वयं भगवान राम अलग अलग रूप में धरती पर जन्म लेते हैं. रामराज्य एक विशिष्ट प्रक्रिया के माध्यम से स्वरूप लेता है. रामराज्य केवल राजनीतिक प्रादर्श नहीं, संपूर्ण जीवन दर्शन है. रामराज्य का आना जीवन शैली और मूल्यों में आमूलचूल परिवर्तन होना हैं. महात्मा गांधी ने रामराज्य को स्वराज्य और धर्मराज्य के रूप में अंगीकार है. लौकिक और अलौकिक दोनों ही रूप में राम हमारे बीच हैं. देश दुनिया में रामकाव्य सदियों से विकासमान रहा है. वाल्मिकी रामायण, तुलसीकृत मानस एवं अन्य कृतियों में राम एक ऐसे नेतृत्वकर्ता के रूप में दिखाई देते हैं, जिनके संरक्षण में जनता चिरकाल तक रहना चाहती है.

विशिष्ट अतिथि डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख ने अपने उद्बबोधन मे कहा कि स्वयं राम और राम कथा के प्रमुख पात्रों ने मूल्य स्थापित किए हैं. वे धर्मानुकूल मार्ग पर चलने की दिशा देते हैं. उनका आचरण मर्यादित है, इसीलिए श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये.

विशिष्ट अतिथि डा. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने अपने उद्बोधन में कहा कि रामकथा में राम के त्याग की भावना उत्कृष्ट साहस का परिणाम है. राम ने कदम कदम पर संयम, त्याग और साहस का प्रमाण दिया है. राम ने माता पिता का वचन आदरपूर्वक निभाया.

विशिष्ट अतिथि डा. प्रभु चौधरी ने कहा कि श्री राम का उदात्त चरित्र और गोस्वामी तुलसीदास की राम कथा आज भी प्रासंगिक है.

राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना की कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमती सुवर्णा जाधव ने कहा- 'सामाजिक जीवन में परस्पर वार्तालाप में जय श्रीराम, राम राम, जय सियाराम कहते की परिपाटी है. पूरे विश्व में राम की कीर्ति है. राम कथा हमें व्यापक ऊर्जा देती है.

विशिष्ट अतिथि राष्ट्रपति एवं राज्यपाल से पुरस्कृत शिक्षक श्री ओमप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि राम नर और नारायण के समन्वय हैं. दुनिया में अनेक ग्रंथ हैं जिनमें रामकथा वर्णित है.

वक्ता के रूप में उपस्थित डा. पूर्णिमा मालवीय ने कहा कि रामकथा के चरित्र में हमें मनुष्यता के बीज दिखाई देते हैं. विश्व बंधुत्व की भावना रामायण से मिलती है.

वक्ता डा. रिया तिवारी ने कहा कि राम शब्द नहीं, स्वरूप हैं, अहसास हैं, अनुभूति हैं.

वक्ता के रूप मे श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव चांपा, छत्तीसगढ़ ने कहा कि वचन निर्वाह, साहस और संयम की दृष्टि से रघुकुल सदियों से आदर्श रहा है. राम ने इन्हें अपने जीवन में निभाया.

अध्यक्षता कर रहीं डा. शैल चन्द्रा, धमतरी ने कहा कि एक मानव का श्रेष्ठतम होना ही राम है. एक नर से नारायण कैसे बनें, यह राम के व्यक्तित्व से हमें सीखना है.

लखनऊ की श्रीमती वंदना श्रीवास्तव ने प्रस्तावना में कहा कि राम में अद्भुत शक्ति थी. रामकाव्य की परंपरा के मूल स्रोत के रूप में वाल्मीकि रामायण है, जिन्होंने विभिन्न कांडों में रामकथा का सरस वर्णन किया है।

गोष्ठी का उत्तम नियंत्रण एवं संचालन विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की रायपुर से हिंदी सांसद डा. मुक्ता कान्हा कौशिक ने किया. उन्होंने कहा कि प्रभु श्रीराम मंगल के निधान और अकल्याण के निवारण करने वाले हैं. मर्यादा पुरुषोत्तम राम से सभी लोगों को प्रेरणा लेनी चाहिए.

इस आभासी गोष्ठी में श्री हरेराम बाजपेयी-इंदौर, डॉ. रश्मि चौबे-गाजियाबाद, रुली सिंह-मुबंई, डां. शिवा लोहारिया-जयपुर आदि ने भी विचार व्यक्त किए.

आरंभ में श्रीमती लता जोशी-मुबंई ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की. अतिथि परिचय डां. प्रभु चौधरी ने दिया. कार्यक्रम में डॉ. प्रवीण बाला-पटियाला, डॉ० गरिमा गर्ग-पंचकूला, सतीश शर्मा, संतोष शर्मा सहित अनेक शिक्षाविद, साहित्यकार, प्रतिभागियों ने उपस्थिति दर्शायी.

आयोजक राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना के राष्ट्रीय उपसचिव डा. आशीष नायक छत्तीसगढ़ रहे.

डा. स्वाति श्रीवास्तव, छत्तीसगढ़ ने सभी का आभार व्यक्त किया.

मां के नाम पर मेरे पास कोई रचना नहीं है!

अभी हाल में ही उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले के रेवसां गांव में एक साहित्यिक कार्यक्रम रखा गया. ग्रामीण अंचल के इस कार्यक्रम में 65 कलमकारों ने हिस्सा लिया. जो भारत के विभिन्न अंचलों से आए थे. एक युवा रचनाकार अलीगढ़ से पहुंचे. रात को 7:00 बजे उन्होंने फोन किया कि रेलवे स्टेशन कुचमन पहुंच चुका हूं. आगे कैसे आना है? समझ में नहीं आ रहा है? उनकी सहायता के लिए तुरंत एक पदाधिकारी को स्टेशन पर रवाना किया गया. उनको लेकर पदाधिकारी कार्यक्रम में आ गए. कार्यक्रम में आने के बाद उन्होंने तुरंत कहा. मुझे रचना पाठ करने का मौका दिया जाए क्योंकि मुझे वापस जाना है रात ८ बजे की मेरी ट्रेन है.

आयोजकों का मत था कि जो व्यक्ति अलीगढ़ से चलकर यहां आया है और सिर्फ आधे घंटे में जाना चाहता है. उसे कार्यक्रम में भाग नहीं लेने दिया जाए. या उसे साफ-साफ बताया जाए. कार्यक्रम के पहले क्या कुछ बताया गया था? क्या कुछ करना है? कैसे करना है? कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक ने उन्हें मौका देने के तहत कहा कि आज एक शाम मां के नाम का कार्यक्रम चल रहा है. अतः आप मां पर कोई रचना सुनाए.रचनाकार ने कहा मैंने तो आज तक मां पर कोई रचना ही नहीं दिखी राष्ट्रीय संयोजक ने उन्हें मोबाइल पर कुछ तलाश करते देखा. उनके पास कुल 12—14 रचनाए थी. जिनमें से वह न जाने क्या कुछ खोज रहे थे. उन्होंने अपनी गजल सुनाई और रात्र को ही 8:00 बजे जाने के लिए तत्पर हो गए. सम्मान के लिए पूछने लगे कि मेरा सम्मान कब मिलेगा? जैसे तैसे उन्हें विदा किया गया। रात्रि को 8:30 बजे उन्हें छोड़ने के लिए पदाधिकारी रेलवे स्टेशन तक गए. अगले दिन पता चला वह पंडित दीनदयाल नगर के रेलवे स्टेशन के आसपास मार्केट में टहलते नजर आए. साथ में उनके कोई था. आप समझ सकते हैं साथ में कौन होगा...

यह सूचना मिलते ही मुझे बहुत ही आघात पहुंचा. साहित्य में किसी भी तरह का कोई खिलवाड़ नहीं चलता साहित्य सेवा है. इस पर चिंतन मनन करने की जरूरत है!

सुधीर सिंह, वाराणसी

बाल संसद

व्यक्तित्व विकास के लिए उपक्रमों में रहे व्यस्त : कु. जिया खान

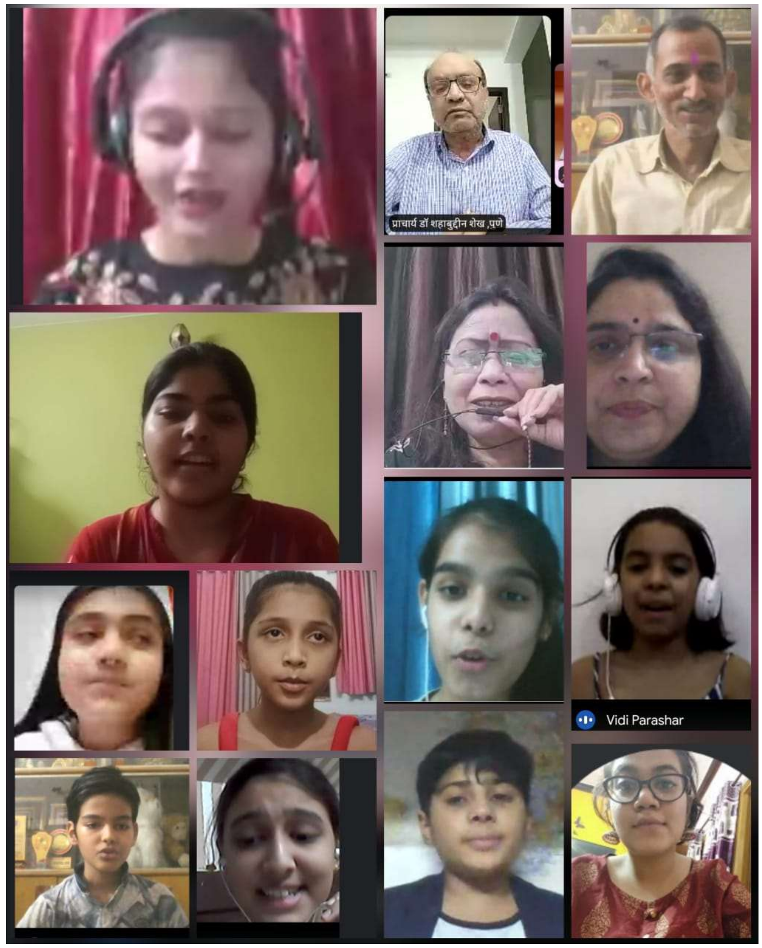

कोरोना काल कब तक रहेगा इसकी कोई गारंटी नहीं. परंतु हमें अपने व्यक्तित्व विकास के लिए निरंतर शैक्षिक तथा सांस्कृतिक उपक्रमों में व्यस्त रहना होगा. ये बात पुणे, महाराष्ट्र की आठवीं की छात्रा कु. जिया रियाज खान ने कही.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में आयोजित आभासी बाल संसद में मुख्य अतिथि के रूप में वह अपना मंतव्य दे रही थी. आयोजन की अध्यक्षता कु. समृद्धि तिवारी, प्रयागराज ने की. कु. जिया खान ने आगे कहा कि पिछले लगभग चौदह-पन्द्रह महीनों से पूरा विश्व कोरोना महामारी की चपेट में है. हम भी कोरोना से जूझ रहे हैं. मार्च 2020 के अंतिम सप्ताह में जब पूर्ण तालाबंदी की घोषणा हुई तब से हमने सरकार के सभी नियमों का पालन करते हुए अपनी शैक्षिक गतिविधियों को जारी रखा हैं. आनलाइन कक्षाओं से कुछ राहत मिलकर विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज की विभिन्न प्रतियोगिताएं हमारे लिये वरदान सिद्ध हुई.

बाल संसद में सम्मिलित बालकों को बताया गया था वे कोरोना काल के अनुभवों को निसंकोच रूप से व्यक्त करें. लगभग पन्द्रह बालकों ने इस बाल संसद में सक्रिय हिस्सा लिया.

कु. अवनी तिवारी, इंदौर ने कहा कि कोरोना काल में हमें नई नई बातें सीखने को मिली है. एक साथ रहकर संघर्ष करने की हिम्मत आयी. कु. अन्वी जायसवाल, दुर्ग, छत्तीसगढ़ ने कहा कि घर में बंद होने से शुरु में अच्छा नहीं लगा. लेकिन बाद में चित्रकारी, कविता, गीत गाने जैसे छंदो में अपने आपको व्यस्त रखा. विशेष बात तो यह है कि हम स्कूल नहीं जा सकते थे बल्कि स्कूल हमारे घर आये. आयोजन के विशिष्ट अतिथि श्री शुभ द्विवेदी, प्रयागराज ने कहा कि ऑनलाइन कक्षाएं और ऑनलाइन परीक्षाएं हमारे लिए चुनौती थीं, परंतु हमने परिस्थिति से समायोजन करके सफलता पायी. धैर्य दीक्षित, गुड़गांव, हरियाणा ने कहा कि परिवार के साथ समय व्यतीत करते हुए हमने मस्ती करना भी सीखा. कु. ऋषिता कुंभज, शिलांग, मेघालय ने कहा कि कोरोना के डर से हम अपने गांव चले गए. लेकिन वहाँ भी नेटवर्क की समस्या का सामना करना पड़ा.

बाल संसद मे श्री शौर्य दीक्षित, गुड़गांव, हरियाणा, कु. मानसी शर्मा, भोपाल तथा श्री मोक्ष कुंभज, शिलांग ने भी अपने अनुभवों को मुक्त रुप से साझा किया. बाल सभा की अध्यक्षता का समापन करते हुए कु. समृद्धि तिवारी, प्रयागराज ने कहा कि प्रारंभ मे कोरोना में परेशानी हुई परंतु बाद में हम अपनी रुचि के कार्यो में व्यस्त रहे.

अतः हमें नयी नयी परियोजनाओं के साथ व्यस्त रहना होगा.

बाल संसद का शुभारंभ कु. मानसी शर्मा, भोपाल की सरस्वती वंदना से प्रांरभ हुआ. तत्पश्चात संस्थान के सचिव डा. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने अतिथि स्वागत में संस्थान के उद्देश्यों व कार्यो पर प्रकाश डाला तथा बताया कि बच्चों की विभिन्न विषयों पर ऑन लाईन चर्चा प्रत्येक माह चलती रहेगी.

संस्थान की छत्तीसगढ़ इकाई की सांसद डा. मुक्ता कान्हा कौशिक, रायपुर, छत्तीसगढ़ ने कहा कि बाल संसद में कोरोना काल में इस तरह के कार्यक्रम सराहनीय है. इससे छोटे बच्चों में आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच, सृजनात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी. डा. रश्मि चौबे, गाजियाबाद, उ. प्र. ने भी अपने विचार रखे.

संस्थान अध्यक्ष प्राचार्य डा. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख, पुणे ने कहा कि बालकों को अभिव्यक्ति की क्षमता छात्रावस्था से प्राप्त करनी चाहिए. विचारों की क्रमबद्धता के लिए विद्यार्थी को श्रवण, लेखन, मनन, चिंतन व भाषण कला पर बल देना चाहिए. बाल संसद का संचालन कु. दीपाली कौशिक, रायपुर ने किया तथा श्रीमती पूर्णिमा कौशिक, रायपुर ने सभी के आभार व्यक्त किये.

रजत जयंति आयोजन

आप सभी सम्मानित गणों को यह अवगत कराना है कि कोरोना के प्रकोप को देखते हुए रजत जयंती वर्ष पर प्रस्तावित भौतिक आयोजन 14 एवं 15 जून 2021 को स्थगित कर दिया गया है. अब यह आयोजन ऑन लाईन होगा तथा भौतिक आयोजन कोरोना के प्रकोप को देखते हुए सितम्बर 2021 में करने पर विचार किया जाएगा। जिसकी सूचना आप लोगों को प्रदान की जाएगी।

नवीन आयोजन निम्नवत होगें:

दिनांक 13 जून : बाल संसद 15 वर्ष तक के बच्चों के काव्य पाठ, आक्सीजन की उपयोगिता पर चर्चा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम (नृत्य, गीत)

दिनांक 14 जून : परिचर्चा एवं काव्य पाठ भारत के 12 राज्यों से चुनिन्दा कवियों द्वारा

दिनांक 15 जून : संस्थान के कुलगीत का लोकार्पण, परिचर्चा, संस्थान की विस्तृत जानकारी

तृ दिवसीय आयोजन में भारत के विभिन्न राज्यों (कर्नाटक, मेघालय, असम, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, उड़ीसा, राजस्थान, गुजरात, छत्तीसगढ़) एवं अमेरिका, कनाडा, मारीशस, ब्रिटेन के अतिथि एवं प्रतिभागी प्रतिभाग करेंगे। आप सभी की ऑन लाईन उपस्थिति प्रार्थनीय है।

सचिव

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विष्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1—20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मषति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मषति सम्मान, बचपना सम्मान **2—20 से 40 वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री **3—40 वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि, **4-सभी आयु वर्ग के लिएः** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री,** 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमश : साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करेंः

अंतिम तिथिः 15 दिसम्बर 2021

चतुर्थ लघु कथा प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5000/रुपये मात्र

देश-विदेश का कोई भी लेखक इसमें प्रतिभाग कर सकता है. इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. आपको अपनी एक लघु कथा पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि लघु कथा 300 (तीन सौं) शब्दों से अधिक की न हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी। 2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी. 3. प्रथम चरण के प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी। 4. द्वितीय चरण के लिए चयनित प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी। 5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए एक रचनाकार का चयन किया जाएगा. जिसे इलाहाबाद में आयोजित होने वाले साहित्य मेला में पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र स्वयं उपस्थित होकर ग्रहण करना होगा। विजेता को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी। 6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा। खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**

बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद,** खाता संख्याः **538702010009259**

आई.एफ.एस. कोडः यूबीआईएन 0553875

रजत जयंति आयोजन

संस्थान जून 2021 में अपना 25 वर्ष पूर्ण कर रहा है। इस अवसर पर दो दिवसीय वृहद आयोजन किया जाएगा.

प्रथम दिन, रविवार, 12.09.2021

-संस्थान के कुलगीत का लोकार्पण
-संस्थान की वेबसाईट का लोकार्पण
-संस्थान की रजत जयंति स्मारिका का विमोचन
-काव्य सम्राट प्रतियोगिता-2019–20
-सारस्वत सम्मान 2019–20
-श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास द्वारा सारस्वत सम्मान
-मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास द्वारा सारस्वत सम्मान

दूसरे दिन सोमवार, 13.09.2021

-संस्थान नवनिर्मित निज पुस्तकालय एवं वाचनालय का उदघाटन
-संस्थान के पदाधिकारियों/हिन्दी सांसदो एवं सदस्यों परिचय सत्र
-संस्थान के पदाधिकारियों/हिन्दी सांसदो एवं सदस्यों की काव्य, चित्रकला, काव्य अतांकक्षरी प्रतियोगिता, नृत्य एवं गायन प्रतियोगिता

इस आयोजन में 25 प्रतिभाओं (साहित्य/समाज सेवा/कला/संस्कृति) को संस्थान की उपाधियों / सारस्वत सम्मानों से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी गण रजत जंयति स्मारिका के लिए सशुल्क शुभकामनाएं, अपने प्रकाशनों का प्रचार-प्रसार, विज्ञापन, चंदा के माध्यम से यथा सम्भव सहयोग प्रदान करें। संस्थान के पदाधिकारियों/सदस्यों के लिए सामूहिक आवास एवं भोजन की व्यवस्था संस्थान करेहिन्दी सांसदो एवं सदस्योंतथा एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जाएगा. अगर आप इस समारोह में प्रतिभाग करना चाहते हैं तो अपना पंजीकरण ई-मेल के माध्यम से पंजीकरण प्रपत्र प्राप्त कर १५ अगस्त २०२१ तक करा सकते है। सभी पंजीकृत प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण पत्र व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।